قرآن مجید

लफ़्ज़ी तरजुमा

eParah

وَاعلَمُوٓا

पारा - 10

خُمُسَهٗ	لِلّٰهِ	فَاَنَّ	مِّنْ شَیْءٍ	غَنِمْتُمْ	اَنَّمَا	وَاعْلَمُوْٓا
पांचवां हिस्सा उसका	अल्लाह के लिए है	तो बेशक	कोई भी चीज़	ग़नीमत में पाओ तुम	कि बेशक जो	और जान लो

وَابْنِ السَّبِيْلِ ۙ	وَالْمَسٰكِيْنِ	وَالْيَتٰمٰى	وَلِذِي الْقُرْبٰى	وَلِلرَّسُوْلِ
और मुसाफ़िर के लिए	और मिस्कीनों	और यतीमों	और क़राबत दारों के लिए	और रसूल के लिए

يَوْمَ الْفُرْقَانِ	عَلٰى عَبْدِنَا	اَنْزَلْنَا	وَمَآ	بِاللّٰهِ	اٰمَنْتُمْ	كُنْتُمْ	اِنْ
फ़ैसले के दिन	अपने बंदे पर	नाज़िल किया हमने	और उस पर जो	अल्लाह पर	ईमान लाए तुम	हो तुम	अगर

اِذْ	قَدِيْرٌ (41)	شَیْءٍ	كُلِّ	عَلٰى	وَاللّٰهُ	الْجَمْعٰنِ ؕ	الْتَقَى	يَوْمَ
जब	खूब क़ुदरत रखने वाला है	चीज़ के	हर	ऊपर	और अल्लाह	दो जमाअतें	आमने सामने हुईं	जिस दिन

وَالرَّكْبُ	الْقُصْوٰى	بِالْعُدْوَةِ	وَهُمْ	الدُّنْيَا	بِالْعُدْوَةِ	اَنْتُمْ
और क़ाफ़िला	दूर के	किनारे पर थे	और वो	क़रीब के	किनारे पर थे	तुम

فِي الْمِيْعٰدِ ۙ	لَاخْتَلَفْتُمْ	تَوَاعَدْتُّمْ	وَلَوْ	مِنْكُمْ ؕ	اَسْفَلَ
मुक़र्रर वक़्त/जगह के बारे में	अलबत्ता इख़्तिलाफ़ करते तुम	आपस में वादा करते तुम	और अगर	तुमसे	नीचे था

مَنْ	لِّيَهْلِكَ	مَفْعُوْلًا ۙ	كَانَ	اَمْرًا	اللّٰهُ	لِّيَقْضِيَ	وَلٰكِنْ
जो	ताकि वो हलाक हो	होकर रहने वाला	जो था	एक काम को	अल्लाह	ताकि पूरा कर दे	और लेकिन

وَاِنَّ	عَنْ بَيِّنَةٍ ؕ	حَيَّ	مَنْ	وَّيَحْيٰى	عَنْ بَيِّنَةٍ	هَلَكَ
और बेशक	साथ वाज़ेह दलील के	ज़िंदा रहे	जो	और वो ज़िंदा रहे	साथ वाज़ेह दलील के	हलाक हो

فِيْ مَنَامِكَ	اللّٰهُ	يُرِيْكَهُمُ	اِذْ	عَلِيْمٌ (42) ۙ	لَسَمِيْعٌ	اللّٰهَ
आपके ख़्वाब में	अल्लाह ने	दिखाया आपको उन्हें	जब	खूब जानने वाला है	अलबत्ता खूब सुनने वाला है	अल्लाह

فِي الْاَمْرِ	وَلَتَنَازَعْتُمْ	لَّفَشِلْتُمْ	كَثِيْرًا	اَرٰىكَهُمْ	وَلَوْ	قَلِيْلًا ؕ
मामले में	और अलबत्ता बाहम झगड़ने लगते तुम	अलबत्ता हिम्मत हार जाते तुम	ज़्यादा	वो दिखाता आपको उन्हें	और अगर	थोड़े

© AL-HUDA INTERNATIONAL WELFARE FOUNDATION

وَلٰكِنَّ	اللّٰهَ	سَلَّمَ ؕ	اِنَّهٗ	عَلِيْمٌۢ	بِذَاتِ الصُّدُوْرِ (43)	وَاِذْ
और लेकिन	अल्लाह ने	सलामत रखा	बेशक वो	ख़ूब जानने वाला है	सीनों वाले (भेद)	और जब

يُرِيْكُمُوْهُمْ	اِذِ	الْتَقَيْتُمْ	فِيْٓ اَعْيُنِكُمْ	قَلِيْلًا	وَّيُقَلِّلُكُمْ
वो दिखा रहा था तुम्हें उनको	जब	आमने-सामने हुए तुम	तुम्हारी निगाहों में	थोड़े	और वो थोड़ा दिखा रहा था तुम्हें

فِيْٓ اَعْيُنِهِمْ	لِيَقْضِيَ	اللّٰهُ	اَمْرًا	كَانَ	مَفْعُوْلًا ؕ	وَاِلَى اللّٰهِ
उनकी निगाहों में	ताकि पूरा कर दे	अल्लाह	काम	था जो	होकर रहने वाला	और तरफ़ अल्लाह ही के

ع 5 7 1

تُرْجَعُ	الْاُمُوْرُ (44) ع	يٰٓاَيُّهَا الَّذِيْنَ	اٰمَنُوْٓا	اِذَا	لَقِيْتُمْ	فِئَةً
लौटाए जाते हैं	सब काम	ऐ लोगो जो	ईमान लाए हो	जब	मुक़ाबला हो तुम्हारा	किसी गिरोह से

فَاثْبُتُوْا	وَاذْكُرُوا	اللّٰهَ	كَثِيْرًا	لَّعَلَّكُمْ	تُفْلِحُوْنَ (45) ج	وَاَطِيْعُوا	اللّٰهَ
तो साबित क़दम रहो	और याद करो	अल्लाह को	कसरत से	ताकि तुम	तुम फ़लाह पाओ	और इताअत करो	अल्लाह की

وَرَسُوْلَهٗ	وَلَا	تَنَازَعُوْا	فَتَفْشَلُوْا	وَتَذْهَبَ	رِيْحُكُمْ
और उसके रसूल की	और ना	तुम बाहम झगड़ो	वरना तुम कम हिम्मत हो जाओगे	और जाती रहेगी	हवा(शान) तुम्हारी

وَاصْبِرُوْا ؕ	اِنَّ	اللّٰهَ	مَعَ	الصّٰبِرِيْنَ (46) ج	وَلَا	تَكُوْنُوْا	كَالَّذِيْنَ
और सब्र करो	बेशक	अल्लाह	साथ है	सब्र करने वालों के	और ना	तुम हो जाओ	मानिंद उनके जो

خَرَجُوْا	مِنْ دِيَارِهِمْ	بَطَرًا	وَّرِئَآءَ	النَّاسِ	وَيَصُدُّوْنَ
निकले	अपने घरों से	इतराते हुए	और दिखावा करते हुए	लोगों को	और वो रोकते थे

عَنْ سَبِيْلِ اللّٰهِ ؕ	وَاللّٰهُ	بِمَا	يَعْمَلُوْنَ	مُحِيْطٌ (47)	وَاِذْ
अल्लाह के रास्ते से	और अल्लाह	उसको जो	वो अमल करते हैं	घेरने वाला है	और जब

زَيَّنَ	لَهُمُ	الشَّيْطٰنُ	اَعْمَالَهُمْ	وَقَالَ	لَا	غَالِبَ	لَكُمُ
मुज़य्यन कर दिया	उनके लिए	शैतान ने	उनके आमाल को	और उसने कहा	नहीं	कोई ग़ालिब आने वाला	तुम पर

AL-HUDA INTERNATIONAL WELFARE FOUNDATION

تَرَآءَتِ	فَلَمَّا	لَّكُمْ ج	جَارٌ	وَاِنِّیْ	مِّنَ النَّاسِ	الْيَوْمَ
एक-दूसरे को देखा	तो जब	तुम्हारा	हमसाया/हिमायती हूं	और बेशक मैं	लोगों में से	आज के दिन

مِّنْكُمْ	بَرِیْٓءٌ	اِنِّیْ	وَقَالَ	عَلٰی عَقِبَيْهِ	نَكَصَ	الْفِئَتٰنِ
तुमसे	बरी-उज़-ज़िम्मा	बेशक मैं	और उसने कहा	अपनी दोनों एड़ियों पर	वो पलट गया	दोनों जमाअतों ने

وَاللّٰهُ	اللّٰهَ ط	اَخَافُ	اِنِّیْٓ	لَا تَرَوْنَ	مَا	اَرٰی	اِنِّیْٓ
और अल्लाह	अल्लाह से	मैं डरता हूं	बेशक मैं	नहीं तुम देख रहे	जो	मैं देख रहा हूं	बेशक मैं

فِیْ قُلُوْبِهِمْ	وَالَّذِيْنَ	الْمُنٰفِقُوْنَ	يَقُوْلُ	اِذْ	الْعِقَابِ (48) ع	شَدِيْدُ
दिलों में जिनके	और वो लोग	मुनाफ़िक़	कह रहे थे	जब	सज़ा वाला है	सख़्त

ع 6 4 2

فَاِنَّ	عَلَی اللّٰهِ	يَّتَوَكَّلْ	وَمَنْ	دِيْنُهُمْ ط	هٰٓؤُلَآءِ	غَرَّ	مَّرَضٌ
तो बेशक	अल्लाह पर	तवक्कल करेगा	और जो कोई	उनके दीन ने	उन लोगों को	धोखे में डाल दिया है	बीमारी थी

الَّذِيْنَ	يَتَوَفَّی	اِذْ	تَرٰٓی	وَلَوْ	حَكِيْمٌ (49)	عَزِيْزٌ	اللّٰهَ
उनको जिन्होंने	फ़ौत करते हैं	जब	आप देखें	और काश	ख़ूब हिक्मत वाला है	बहुत ज़बरदस्त है	अल्लाह

وَذُوْقُوْا	وَاَدْبَارَهُمْ ج	وُجُوْهَهُمْ	يَضْرِبُوْنَ	الْمَلٰٓئِكَةُ	كَفَرُوا لا
और (वो कहते हैं) चखो	और उनकी पीठों पर	उनके चेहरों पर	वो मारते हैं	फ़रिश्ते	कुफ़्र किया

وَاَنَّ	اَيْدِيْكُمْ	قَدَّمَتْ	بِمَا	ذٰلِكَ	الْحَرِيْقِ (50)	عَذَابَ
और बेशक	तुम्हारे हाथों ने	आगे भेजा	बवजह उसके जो	ये	आग का	अज़ाब

وَالَّذِيْنَ	اٰلِ فِرْعَوْنَ لا	كَدَاْبِ	لِّلْعَبِيْدِ (51) لا	بِظَلَّامٍ	لَيْسَ	اللّٰهَ
और उनकी जो	आले फ़िरऔन की	जैसी हालत थी	बंदों पर	कोई ज़ुल्म करने वाला	नहीं है	अल्लाह

بِذُنُوْبِهِمْ ط	اللّٰهُ	فَاَخَذَهُمُ	بِاٰيٰتِ اللّٰهِ	كَفَرُوْا	مِنْ قَبْلِهِمْ ط
बवजह उनके गुनाहों के	अल्लाह ने	फिर पकड़ लिया उन्हें	अल्लाह की आयात का	उन्होंने कुफ़्र किया	उनसे पहले थे

© AL-QUDS INTERNATIONAL WELFARE FOUNDATION

اِنَّ	اللّٰهَ	قَوِيٌّ	شَدِيْدُ	الْعِقَابِ (52)	ذٰلِكَ	بِاَنَّ	اللّٰهَ	لَمْ
बेशक	अल्लाह	बहुत क़ुव्वत वाला है	सख़्त	सज़ा वाला है	ये	बवजह इसके कि	अल्लाह	नहीं

يَكُ	مُغَيِّرًا	نِّعْمَةً	اَنْعَمَهَا	عَلٰى قَوْمٍ	حَتّٰى	يُغَيِّرُوْا	مَا
है वो	तब्दील करने वाला	किसी नेअमत को	उसने इनाम किया हो जिसे	किसी क़ौम पर	यहां तक कि	वो तब्दील कर दें	उसे जो

بِاَنْفُسِهِمْ ۙ	وَ اَنَّ	اللّٰهَ	سَمِيْعٌ	عَلِيْمٌ (53) ۙ	كَدَاْبِ	اٰلِ فِرْعَوْنَ ۙ
उनके नफ़्सों में है	और बेशक	अल्लाह	ख़ूब सूनने वाला है	ख़ूब जानने वाला है	जैसी हालत थी	आले फ़िरऔन की

وَالَّذِيْنَ	مِنْ قَبْلِهِمْ ؕ	كَذَّبُوْا	بِاٰيٰتِ	رَبِّهِمْ	فَاَهْلَكْنٰهُمْ
और उनकी जो	उनसे पहले थे	उन्होंने झुठलाया	आयात को	अपने रब की	तो हलाक कर दिया हमने उन्हें

بِذُنُوْبِهِمْ	وَ اَغْرَقْنَآ	اٰلَ فِرْعَوْنَ ۚ	وَ كُلٌّ	كَانُوْا	ظٰلِمِيْنَ (54)
बवजह उनके गुनाहों के	और ग़र्क़ कर दिया हमने	आले फ़िरऔन को	और सबके सब	थे वो	ज़ालिम

اِنَّ	شَرَّ	الدَّوَآبِّ	عِنْدَ اللّٰهِ	الَّذِيْنَ	كَفَرُوْا	فَهُمْ
बेशक	बदतरीन	जानदारों में	अल्लाह के नज़दीक	वो हैं जिन्होंने	कुफ़्र किया	पस वो

لَا يُؤْمِنُوْنَ (55) ۖ	اَلَّذِيْنَ	عٰهَدْتَّ	مِنْهُمْ	ثُمَّ	يَنْقُضُوْنَ	عَهْدَهُمْ
नहीं वो ईमान लाएंगे	वो लोग जो	अहद लिया आपने	उनसे	फिर	वो तोड़ देते हैं	अपने अहद को

فِيْ كُلِّ	مَرَّةٍ	وَّهُمْ	لَا يَتَّقُوْنَ (56)	فَاِمَّا	تَثْقَفَنَّهُمْ	فِي الْحَرْبِ
हर	बार	और वो	नहीं वो डरते	फिर अगर	आप पाएं उन्हें	जंग में

فَشَرِّدْ	بِهِمْ	مَّنْ	خَلْفَهُمْ	لَعَلَّهُمْ	يَذَّكَّرُوْنَ (57)	وَ اِمَّا
तो मार भगाएं	उनके ज़रिए	उन्हें जो	पीछे हैं उनके	शायद कि वो	वो नसीहत पकड़ें	और अगर

تَخَافَنَّ	مِنْ قَوْمٍ	خِيَانَةً	فَانْۢبِذْ	اِلَيْهِمْ	عَلٰى سَوَآءٍ ؕ
आप वाक़ई ख़ौफ़ रखते हैं	किसी क़ौम से	ख़्यानत का	पस फेंक दीजिए (अहद)	तरफ़ उनके	बराबरी पर

AL-HUDA INTERNATIONAL WELFARE FOUNDATION

ع 7 10 3

اِنَّ	اللّٰهَ	لَا يُحِبُّ	الْخَآئِنِيْنَ ع (58)	وَلَا	يَحْسَبَنَّ	الَّذِيْنَ	كَفَرُوْا
बेशक	अल्लाह	नहीं वो पसंद करता	ख़्यानत करने वालों को	और ना	हरगिज़ गुमान करें	वो जिन्होंने	कुफ़्र किया

سَبَقُوْا ؕ	اِنَّهُمْ	لَا يُعْجِزُوْنَ (59)	وَاَعِدُّوْا	لَهُمْ	مَّا
कि वो सबक़त ले गए	बेशक वो	नहीं वो आजिज़ कर सकते	और तैयार रखो	उनके लिए	जो

اسْتَطَعْتُمْ	مِّنْ قُوَّةٍ	وَّمِنْ رِّبَاطِ الْخَيْلِ	تُرْهِبُوْنَ	بِهٖ
इस्तिताअत रखते हो तुम	क़ुव्वत में से	और बांधे हुए घोड़ों से	तुम डराओगे	साथ उसके

عَدُوَّ اللّٰهِ	وَعَدُوَّكُمْ	وَاٰخَرِيْنَ	مِنْ دُوْنِهِمْ ج	لَا تَعْلَمُوْنَهُمْ ج
अल्लाह के दुश्मनों को	और अपने दुश्मनों को	और कुछ दूसरों को	उनके इलावा	नहीं तुम जानते उन्हें

اَللّٰهُ	يَعْلَمُهُمْ ؕ	وَمَا	تُنْفِقُوْا	مِنْ شَيْءٍ	فِيْ سَبِيْلِ اللّٰهِ	يُوَفَّ
अल्लाह	वो जानता है उन्हें	और जो	तुम ख़र्च करोगे	कुछ भी	अल्लाह के रास्ते में	वो पूरा-पूरा दिया जाएगा

اِلَيْكُمْ	وَاَنْتُمْ	لَا تُظْلَمُوْنَ (60)	وَاِنْ	جَنَحُوْا	لِلسَّلْمِ	فَاجْنَحْ
तुम्हें	और तुम	ना तुम ज़ुल्म किए जाओगे	और अगर	वो माइल हों	सुलह के लिए	तो आप भी माइल हो जाइए

لَهَا	وَتَوَكَّلْ	عَلَى اللّٰهِ ؕ	اِنَّهٗ	هُوَ	السَّمِيْعُ	الْعَلِيْمُ (61)	وَاِنْ
उसके लिए	और तवक्कल कीजिए	अल्लाह पर	बेशक वो	वो ही है	ख़ूब सुनने वाला	ख़ूब जानने वाला	और अगर

يُّرِيْدُوْٓا	اَنْ	يَّخْدَعُوْكَ	فَاِنَّ	حَسْبَكَ	اللّٰهُ ؕ	هُوَ	الَّذِيْٓ
वो चाहें	कि	वो धोखा दें आपको	तो बेशक	काफ़ी है आपको	अल्लाह	वो ही है	जिसने

اَيَّدَكَ	بِنَصْرِهٖ	وَبِالْمُؤْمِنِيْنَ لا (62)	وَاَلَّفَ	بَيْنَ	قُلُوْبِهِمْ ؕ	لَوْ
ताईद की आपकी	साथ अपनी मदद के	और साथ मोमिनों के	और उसने उलफ़त डाल दी	दर्मियान	उनके दिलों के	अगर

اَنْفَقْتَ	مَا	فِي الْاَرْضِ	جَمِيْعًا	مَّآ	اَلَّفْتَ	بَيْنَ	قُلُوْبِهِمْ
ख़र्च करते आप	जो कुछ	ज़मीन में है	सारे का सारा	ना	उलफ़त डाल सकते थे आप	दर्मियान	उनके दिलों के

© AL-HUDA INTERNATIONAL WELFARE FOUNDATION

وَلٰكِنَّ	اللّٰهَ	اَلَّفَ	بَيْنَهُمْ ط	اِنَّهٗ	عَزِيْزٌ	حَكِيْمٌ (63)
और लेकिन	अल्लाह ने	उलफ़त डाल दी	दर्मियान उनके	बेशक वो	बहुत ज़बरदस्त है	बहुत हिक्मत वाला है

ع 8 6 4

يٰٓاَيُّهَا	النَّبِيُّ	حَسْبُكَ	اللّٰهُ	وَمَنِ	اتَّبَعَكَ	مِنَ الْمُؤْمِنِيْنَ (64) ع
ऐ	नबी	काफ़ी है आपको	अल्लाह	और उसे जो	पैरवी करे आपकी	मोमिनों में से

يٰٓاَيُّهَا	النَّبِيُّ	حَرِّضِ	الْمُؤْمِنِيْنَ	عَلَى الْقِتَالِ ط	اِنْ	يَّكُنْ	مِّنْكُمْ
ऐ	नबी	रग़बत दिलाइए	मोमिनों को	जंग पर	अगर	होंगे	तुम में से

عِشْرُوْنَ	صٰبِرُوْنَ	يَغْلِبُوْا	مِائَتَيْنِ ج	وَاِنْ	يَّكُنْ	مِّنْكُمْ
बीस	सब्र करने वाले	वो ग़ालिब आ जाऐंगे	दो सौ पर	और अगर	होंगे	तुम में से

مِّائَةٌ	يَّغْلِبُوْٓا	اَلْفًا	مِّنَ الَّذِيْنَ	كَفَرُوْا	بِاَنَّهُمْ
एक सौ	वो ग़ालिब आ जाऐंगे	एक हज़ार पर	उनमें से जिन्होंने	कुफ़्र किया	बवजह उसके कि वो

قَوْمٌ	لَّا يَفْقَهُوْنَ (65)	اَلْـٰٔنَ	خَفَّفَ	اللّٰهُ	عَنْكُمْ	وَعَلِمَ
ऐसे लोग हैं	जो समझ नहीं रखते	अब	हल्का कर दिया (बोझ)	अल्लाह ने	तुमसे	और उसने जान लिया

اَنَّ	فِيْكُمْ	ضَعْفًا ط	فَاِنْ	يَّكُنْ	مِّنْكُمْ	مِّائَةٌ	صَابِرَةٌ
बेशक	तुम में	कमज़ोरी है	पस अगर	हों	तुम में से	एक सौ	सब्र करने वाले

يَّغْلِبُوْا	مِائَتَيْنِ ج	وَاِنْ	يَّكُنْ	مِّنْكُمْ	اَلْفٌ	يَّغْلِبُوْٓا
वो ग़ालिब आ जाऐंगे	दोसौ पर	और अगर	हों	तुम में से	एक हज़ार	वो ग़ालिब आ जाऐंगे

اَلْفَيْنِ	بِاِذْنِ اللّٰهِ ط	وَاللّٰهُ	مَعَ	الصّٰبِرِيْنَ (66)	مَا	كَانَ	لِنَبِيٍّ
दो हज़ार पर	अल्लाह के इज़्न से	और अल्लाह	साथ है	सब्र करने वालों के	नहीं	है	किसी नबी के लिए

اَنْ	يَّكُوْنَ	لَهٗٓ	اَسْرٰى	حَتّٰى	يُثْخِنَ	فِي الْاَرْضِ ط
कि	हों	उसके लिए	क़ैदी	यहां तक कि	वो अच्छी तरह ख़ून बहा दे	ज़मीन में

© AL-HUDA INTERNATIONAL WELFARE FOUNDATION

عَزِيْزٌ	وَاللّٰهُ	الْاٰخِرَةَؕ	يُرِيْدُ	وَاللّٰهُ	الدُّنْيَاۖ	عَرَضَ	تُرِيْدُوْنَ
बहुत ज़बरदस्त है	और अल्लाह	आख़िरत	चाहता है	और अल्लाह	दुनिया का	सामान	तुम चाहते हो

فِيْمَآ	لَمَسَّكُمْ	سَبَقَ	مِّنَ اللّٰهِ	كِتٰبٌ	لَوْلَا	حَكِيْمٌ (67)
इसके (बदले) में जो	अलबत्ता पहुंचता तुम्हें	जो गुज़र चुका	अल्लाह की तरफ़ से	लिखा हुआ	अगर ना होता	ख़ूब हिक्मत वाला है

حَلٰلًا	غَنِمْتُمْ	مِمَّا	فَكُلُوْا	عَظِيْمٌ (68)	عَذَابٌ	اَخَذْتُمْ
हलाल	ग़नीमत पाई तुमने	उसमें से जो	पस खाओ	बहुत बड़ा	अज़ाब	लिया तुमने

رَّحِيْمٌ (69) ع	غَفُوْرٌ	اللّٰهَ	اِنَّ	اللّٰهَؕ	وَّاتَّقُوا	طَيِّبًاۖ
निहायत रहम करने वाला है	बहुत बख़्शने वाला है	अल्लाह	बेशक	अल्लाह से	और डरो	पाक

ع 9 5 5

اِنْ	مِّنَ الْاَسْرٰٓىۙ	فِيْٓ اَيْدِيْكُمْ	لِّمَنْ	قُلْ	النَّبِيُّ	يٰٓاَيُّهَا
अगर	क़ैदियों में से	तुम्हारे हाथों में हैं	उनसे जो	कह दीजिए	नबी	ऐ

اُخِذَ	مِّمَّآ	خَيْرًا	يُّؤْتِكُمْ	خَيْرًا	فِيْ قُلُوْبِكُمْ	اللّٰهُ	يَّعْلَمِ
ले लिया गया	उससे जो	बेहतर	वो देगा तुम्हें	कोई भलाई	तुम्हारे दिलों में	अल्लाह	जान लेगा

وَاِنْ	رَّحِيْمٌ (70)	غَفُوْرٌ	وَاللّٰهُ	لَكُمْؕ	وَيَغْفِرْ	مِنْكُمْ
और अगर	निहायत रहम करने वाला है	बहुत बख़्शने वाला है	और अल्लाह	तुम्हें	और वो बख़्श देगा	तुम से

فَاَمْكَنَ	مِنْ قَبْلُ	اللّٰهَ	خَانُوا	فَقَدْ	خِيَانَتَكَ	يُّرِيْدُوْا
तो उसने क़ाबू में दे दिया	इससे पहले	अल्लाह से	उन्होंने ख़्यानत की	पस तहक़ीक़	आपसे ख़्यानत का	वो इरादा करेंगे

وَهَاجَرُوْا	اٰمَنُوْا	الَّذِيْنَ	اِنَّ	حَكِيْمٌ (71)	عَلِيْمٌ	وَاللّٰهُ	مِنْهُمْؕ
और उन्होंने हिजरत की	ईमान लाए	वो जो	बेशक	बहुत हिक्मत वाला है	बहुत इल्म वाला है	और अल्लाह	उन्हें

وَالَّذِيْنَ	فِيْ سَبِيْلِ اللّٰهِ	وَاَنْفُسِهِمْ	بِاَمْوَالِهِمْ	وَجٰهَدُوْا
और वो जिन्होंने	अल्लाह के रास्ते में	और अपनी जानों के	साथ अपने मालों	और उन्होंने जिहाद किया

AL-HUDA INTERNATIONAL WELFARE FOUNDATION

اٰوَوْا	وَّنَصَرُوْٓا	اُولٰٓئِكَ	بَعْضُهُمْ	اَوْلِيَآءُ	بَعْضٍ ؕ	وَالَّذِيْنَ
पनाह दी	और मदद की	यही लोग हैं	बाज़ उनके	दोस्त हैं	बाज़ के	और वो जो

اٰمَنُوْا	وَلَمْ	يُهَاجِرُوْا	مَا	لَكُمْ	مِّنْ وَّلَايَتِهِمْ	مِّنْ شَيْءٍ
ईमान लाए	और नहीं	उन्होंने हिजरत की	नहीं है	तुम्हारे लिए	उनकी दोस्ती में से	कोई भी चीज़

حَتّٰى	يُهَاجِرُوْا ۚ	وَاِنِ	اسْتَنْصَرُوْكُمْ	فِي الدِّيْنِ	فَعَلَيْكُمُ
यहां तक कि	वो हिजरत कर जाएं	और अगर	वो मदद मांगें तुमसे	दीन के मामले में	तो तुम पर लाज़िम है

النَّصْرُ	اِلَّا	عَلٰى قَوْمٍ	بَيْنَكُمْ	وَبَيْنَهُمْ	مِّيْثَاقٌ ؕ	وَاللّٰهُ
मदद करना	मगर	उस क़ौम के ख़िलाफ़	दर्मियान तुम्हारे	और दर्मियान उनके	पुख़्ता मुआहिदा है	और अल्लाह

بِمَا	تَعْمَلُوْنَ	بَصِيْرٌ (72)	وَالَّذِيْنَ	كَفَرُوْا	بَعْضُهُمْ	اَوْلِيَآءُ
उसे जो	तुम अमल करते हो	ख़ूब देखने वाला है	और वो जिन्होंने	कुफ़्र किया	बाज़ उनके	मददगार हैं

بَعْضٍ ؕ	اِلَّا	تَفْعَلُوْهُ	تَكُنْ	فِتْنَةٌ	فِي الْاَرْضِ	وَفَسَادٌ	كَبِيْرٌ ؕ (73)
बाज़ के	अगर नहीं	तुम करोगे ऐसा	होगा	फ़ितना	ज़मीन में	और फ़साद	बहुत बड़ा

وَالَّذِيْنَ	اٰمَنُوْا	وَهَاجَرُوْا	وَجٰهَدُوْا	فِيْ سَبِيْلِ اللّٰهِ	وَالَّذِيْنَ
और वो जो	ईमान लाए	और उन्होंने हिजरत की	और उन्होंने जिहाद किया	अल्लाह के रास्ते में	और वो जिन्होंने

اٰوَوْا	وَّنَصَرُوْٓا	اُولٰٓئِكَ	هُمُ	الْمُؤْمِنُوْنَ	حَقًّا ؕ	لَهُمْ	مَّغْفِرَةٌ
पनाह दी	और मदद की	यही लोग हैं	वो	जो मोमिन हैं	सच्चे	उनके लिए	बख़्शिश है

وَّرِزْقٌ	كَرِيْمٌ (74)	وَالَّذِيْنَ	اٰمَنُوْا	مِنْۢ بَعْدُ	وَهَاجَرُوْا	وَجٰهَدُوْا
और रिज़्क़	इज़्ज़त वाला	और वो जो	ईमान लाए	बाद इसके	और उन्होंने हिजरत की	और जिहाद किया

مَعَكُمْ	فَاُولٰٓئِكَ	مِنْكُمْ ؕ	وَاُولُوا الْاَرْحَامِ	بَعْضُهُمْ	اَوْلٰى
तुम्हारे साथ	तो यही लोग हैं	तुम में से	और रहम / रिश्तों वाले	बाज़ उनके	ज़्यादा क़रीब हैं

© AL-HUDA INTERNATIONAL WELFARE FOUNDATION

ع 10 6 6

بِبَعْضٍ	فِيْ كِتٰبِ اللّٰهِ ط	اِنَّ	اللّٰهَ	بِكُلِّ	شَيْءٍ	عَلِيْمٌ (75) ع
बाज़ के	अल्लाह की किताब में	बेशक	अल्लाह	हर	चीज़ को	ख़ूब जानने वाला है

اٰيَاتُهَا : 129 — 9 سُوْرَةُ التَّوْبَةِ مَدَنِيَّةٌ 113 — رُكُوْعَاتُهَا : 16

بَرَآءَةٌ	مِّنَ اللّٰهِ	وَرَسُوْلِهٖٓ	اِلَى الَّذِيْنَ	عٰهَدْتُّمْ
(ऐलान) बराअत है	अल्लाह की तरफ़ से	और उसके रसूल (की तरफ़ से)	तरफ़ उनके जिनसे	मुआहिदा किया तुमने

مِّنَ الْمُشْرِكِيْنَ (1) ط	فَسِيْحُوْا	فِي الْاَرْضِ	اَرْبَعَةَ	اَشْهُرٍ	وَّاعْلَمُوْٓا
मुशरिकीन में से	पस चलो-फिरो तुम	ज़मीन में	चार	महीने	और जान लो

اَنَّكُمْ	غَيْرُ	مُعْجِزِي	اللّٰهِ لا	وَاَنَّ	اللّٰهَ	مُخْزِي	الْكٰفِرِيْنَ (2)
बेशक तुम	नहीं	आजिज़ करने वाले	अल्लाह को	और बेशक	अल्लाह	रुसवा करने वाला है	काफ़िरों को

وَاَذَانٌ	مِّنَ اللّٰهِ	وَرَسُوْلِهٖٓ	اِلَى النَّاسِ	يَوْمَ	الْحَجِّ الْاَكْبَرِ
और ऐलान है	अल्लाह की तरफ़ से	और उसके रसूल की तरफ़ से	तरफ़ लोगों के	दिन	हज्जेअकबर के

اَنَّ	اللّٰهَ	بَرِيْٓءٌ	مِّنَ الْمُشْرِكِيْنَ ۙ	وَرَسُوْلُهٗ ط	فَاِنْ	تُبْتُمْ	فَهُوَ
बेशक	अल्लाह	बरीउज़्ज़िम्मा है	मुशरिकों से	और उसका रसूल भी	फिर अगर	तौबा कर लो तुम	तो वो

خَيْرٌ	لَّكُمْ ج	وَاِنْ	تَوَلَّيْتُمْ	فَاعْلَمُوْٓا	اَنَّكُمْ	غَيْرُ	مُعْجِزِي
बेहतर है	तुम्हारे लिए	और अगर	मुंह फेरा तुमने	तो जान लो	बेशक तुम	नहीं	आजिज़ करने वाले

اللّٰهِ ط	وَبَشِّرِ	الَّذِيْنَ	كَفَرُوْا	بِعَذَابٍ	اَلِيْمٍ (3) لا	اِلَّا
अल्लाह को	और ख़ुशख़बरी दे दीजिए	उनको जिन्होंने	कुफ़्र किया	अज़ाब	दर्दनाक की	सिवाए

الَّذِيْنَ	عٰهَدْتُّمْ	مِّنَ الْمُشْرِكِيْنَ	ثُمَّ	لَمْ	يَنْقُصُوْكُمْ	شَيْئًا
उनके जिनसे	मुआहिदा किया तुमने	मुशरिकीन में से	फिर	नहीं	उन्होंने कमी की तुमसे	कुछ भी

© AL-HUDA INTERNATIONAL WELFARE FOUNDATION

وَلَمْ	يُظَاهِرُوا	عَلَيْكُمْ	أَحَدًا	فَأَتِمُّوا	إِلَيْهِمْ	عَهْدَهُمْ
और ना ही	उन्होंने पुश्त पनाही की	तुम्हारे ख़िलाफ़	किसी की	तो पूरा करो	तरफ़ उनके	अहद उनके

إِلَىٰ مُدَّتِهِمْ ط	إِنَّ	اللَّهَ	يُحِبُّ	الْمُتَّقِينَ (4)	فَإِذَا	انْسَلَخَ
उनकी मुद्दत तक	बेशक	अल्लाह	वो पसंद करता है	मुत्तक़ी लोगों को	फिर जब	गुज़र जाएं

الْأَشْهُرُ	الْحُرُمُ	فَاقْتُلُوا	الْمُشْرِكِينَ	حَيْثُ	وَجَدْتُمُوهُمْ
महीने	हुरमत वाले	तो क़त्ल करो	मुशरिकों को	जहां कहीं	पाओ तुम उन्हें

وَخُذُوهُمْ	وَاحْصُرُوهُمْ	وَاقْعُدُوا	لَهُمْ	كُلَّ	مَرْصَدٍ ج	فَإِنْ
और पकड़ो उन्हें	और घेरो उन्हें	और बैठ जाओ	उनके लिए	हर	घात पर	फिर अगर

تَابُوا	وَأَقَامُوا	الصَّلَاةَ	وَآتَوُا	الزَّكَاةَ	فَخَلُّوا	سَبِيلَهُمْ ط	إِنَّ
वो तौबा कर लें	और वो क़ायम करें	नमाज़	और वो अदा करें	ज़कात	तो छोड़ दो	रास्ता उनका	बेशक

اللَّهَ	غَفُورٌ	رَحِيمٌ (5)	وَإِنْ	أَحَدٌ	مِنَ الْمُشْرِكِينَ	اسْتَجَارَكَ
अल्लाह	बहुत बख़्शने वाला है	निहायत रहम करने वाला है	और अगर	कोई एक	मुशरिकीन में से	पनाह मांगे आपसे

فَأَجِرْهُ	حَتَّىٰ	يَسْمَعَ	كَلَامَ	اللَّهِ	ثُمَّ	أَبْلِغْهُ	مَأْمَنَهُ ط
तो पनाह दे दीजिए उसे	यहां तक कि	वो सुन ले	कलाम	अल्लाह का	फिर	पहुंचा दीजिए उसे	उसके अमन की जगह

ذَٰلِكَ	بِأَنَّهُمْ	قَوْمٌ	لَا يَعْلَمُونَ (6) ع	كَيْفَ	يَكُونُ	لِلْمُشْرِكِينَ	ع 1 6 7
ये	बवजह उसके कि वो	लोग	नहीं वो इल्म रखते	किस तरह	हो सकता है	मुशरिकीन के लिए	

عَهْدٌ	عِنْدَ اللَّهِ	وَعِنْدَ رَسُولِهِ	إِلَّا	الَّذِينَ	عَاهَدْتُمْ
कोई अहद	अल्लाह के नज़दीक	और उसके रसूल के नज़दीक	सिवाए	उनके जिनसे	मुआहिदा किया तुमने

عِنْدَ	الْمَسْجِدِ الْحَرَامِ ج	فَمَا	اسْتَقَامُوا	لَكُمْ	فَاسْتَقِيمُوا	لَهُمْ ط
पास	मस्जिदे हराम के	तो जब तक	वो सीधे रहें	तुम्हारे लिए	पस तुम भी सीधे रहो	उनके लिए

© AL HUDA INTERNATIONAL WELFARE FOUNDATION

إِنَّ	اللّٰهَ	يُحِبُّ	الْمُتَّقِيْنَ ⑦	كَيْفَ	وَاِنْ	يَّظْهَرُوْا	عَلَيْكُمْ
बेशक	अल्लाह	वो पसंद करता है	मुत्तक़ी लोगों को	कैसे (मुमकिन है)	जबकि अगर	वो ग़लबा पा जाएं	तुम पर

لَا يَرْقُبُوْا	فِيْكُمْ	اِلًّا	وَّلَا	ذِمَّةً ط	يُرْضُوْنَكُمْ	بِاَفْوَاهِهِمْ
ना वो लिहाज़ करेंगे	तुम्हारे मामले में	किसी क़राबत का	और ना	किसी मुआहिदे का	वो राज़ी करते हैं तुम्हें	अपने मुंहों से

وَتَاْبٰى	قُلُوْبُهُمْ ج	وَاَكْثَرُهُمْ	فٰسِقُوْنَ ⑧ ج	اِشْتَرَوْا	بِاٰيٰتِ اللّٰهِ
और इंकार करते हैं	दिल उनके	और अक्सर उनके	फ़ासिक़ हैं	उन्होंने बेच डाला	अल्लाह की आयात को

ثَمَنًا	قَلِيْلًا	فَصَدُّوْا	عَنْ سَبِيْلِهٖ ط	اِنَّهُمْ	سَآءَ	مَا	كَانُوْا
क़ीमत	थोड़ी में	फिर उन्होंने रोका	उसके रास्ते से	बेशक वो	कितना बुरा है	जो	हैं वो

يَعْمَلُوْنَ ⑨	لَا يَرْقُبُوْنَ	فِيْ مُؤْمِنٍ	اِلًّا	وَّلَا	ذِمَّةً ط
वो अमल कर रहे	नहीं वो लिहाज़ करते	किसी मोमिन (के बारे में)	किसी क़राबत का	और ना	किसी मुआहिदे का

وَاُولٰٓئِكَ	هُمُ	الْمُعْتَدُوْنَ ⑩	فَاِنْ	تَابُوْا	وَاَقَامُوا	الصَّلٰوةَ	وَاٰتَوُا
और यही लोग हैं	वो	जो हद से बढ़ने वाले हैं	फिर अगर	वो तौबा कर लें	और वो क़ायम करें	नमाज़	और वो अदा करें

الزَّكٰوةَ	فَاِخْوَانُكُمْ	فِي الدِّيْنِ ط	وَنُفَصِّلُ	الْاٰيٰتِ	لِقَوْمٍ
ज़कात	तो भाई हैं तुम्हारे	दीन में	और हम खोल-खोल कर बयान करते हैं	आयात को	उन लोगों के लिए

يَّعْلَمُوْنَ ⑪	وَاِنْ	نَّكَثُوْٓا	اَيْمَانَهُمْ	مِّنْۢ بَعْدِ	عَهْدِهِمْ	وَطَعَنُوْا
जो इल्म रखते हैं	और अगर	वो तोड़ दें	अपनी क़समें	बाद	अपने अहद करने के	और वो तअन करें

فِيْ دِيْنِكُمْ	فَقَاتِلُوْٓا	اَئِمَّةَ	الْكُفْرِ لا	اِنَّهُمْ	لَآ اَيْمَانَ	لَهُمْ
तुम्हारे दीन में	तो जंग करो	इमामों से	कुफ़्र के	बेशक वो	नहीं हैं कोई क़समें	उनकी

لَعَلَّهُمْ	يَنْتَهُوْنَ ⑫	اَلَا	تُقَاتِلُوْنَ	قَوْمًا	نَّكَثُوْٓا	اَيْمَانَهُمْ
ताकि वो	वो रुक जाएं	क्या नहीं	तुम जंग करोगे	ऐसी क़ौम से	जिन्होंने तोड़ दीं	अपनी क़समें

أَوَّلَ مَرَّةٍ ۚ	بَدَءُوكُمْ	وَهُمْ	الرَّسُولِ	بِإِخْرَاجِ	وَهَمُّوا
पहली मर्तबा	उन्होंने इब्तिदा की थी तुमसे	हालांकि वो	रसूल को	निकालने का	और उन्होंने इरादा किया

كُنْتُمْ	إِنْ	تَخْشَوْهُ	أَنْ	أَحَقُّ	فَاللَّهُ	أَتَخْشَوْنَهُمْ ۚ
हो तुम	अगर	तुम डरो उससे	कि	ज़्यादा हक़दार है	तो अल्लाह	क्या तुम डरते हो उनसे

وَيُخْزِهِمْ	بِأَيْدِيكُمْ	اللَّهُ	يُعَذِّبْهُمُ	قَاتِلُوهُمْ	مُؤْمِنِينَ (13)
और वो रुसवा करेगा उन्हें	तुम्हारे हाथों से	अल्लाह	अज़ाब देगा उन्हें	जंग करो उनसे	ईमान लाने वाले

وَيُذْهِبْ	قَوْمٍ مُؤْمِنِينَ (14) ۙ	صُدُورَ	وَيَشْفِ	عَلَيْهِمْ	وَيَنْصُرْكُمْ
और वो ले जाएगा	मोमिन क़ौम के	सीनों को	और वो शिफ़ा बख़्शेगा	उनके ख़िलाफ़	और वो मदद करेगा तुम्हारी

عَلِيمٌ	وَاللَّهُ	يَشَاءُ ۗ	عَلَىٰ مَنْ	اللَّهُ	وَيَتُوبُ	قُلُوبِهِمْ ۗ	غَيْظَ
ख़ूब इल्म वाला है	और अल्लाह	वो चाहेगा	ऊपर जिसके	अल्लाह	और मेहरबान होगा	उनके दिलों का	गुस्सा

اللَّهُ	يَعْلَمِ	وَلَمَّا	تُتْرَكُوا	أَنْ	حَسِبْتُمْ	أَمْ	حَكِيمٌ (15)
अल्लाह ने	जाना	हालांकि अभी तक नहीं	तुम छोड़ दिए जाओगे	कि	गुमान किया तुमने	क्या	बहुत हिक्मत वाला है

وَلَا	اللَّهِ	مِنْ دُونِ	يَتَّخِذُوا	وَلَمْ	مِنْكُمْ	جَاهَدُوا	الَّذِينَ
और ना	अल्लाह के	सिवाए	उन्होंने बनाया	और नहीं	तुम में से	जिहाद किया	उनको जिन्होंने

بِمَا	خَبِيرٌ	وَاللَّهُ	وَلِيجَةً ۚ	الْمُؤْمِنِينَ	وَلَا	رَسُولِهِ
उसकी जो	ख़ूब ख़बर रखने वाला है	और अल्लाह	कोई दिली दोस्त	मोमिनों के	और ना	उसके रसूल के

ع 2 10 8

اللَّهِ	مَسَاجِدَ	يَعْمُرُوا	أَنْ	لِلْمُشْرِكِينَ	كَانَ	مَا	تَعْمَلُونَ (16) ع
अल्लाह की	मस्जिदें	वो आबाद करें	कि	मुशरिकीन के लिए	है	नहीं	तुम अमल करते हो

أَعْمَالُهُمْ ۚ	حَبِطَتْ	أُولَٰئِكَ	بِالْكُفْرِ ۚ	عَلَىٰ أَنْفُسِهِمْ	شَاهِدِينَ
आमाल उनके	ज़ाया हो गए	यही लोग हैं	कुफ़्र की	अपने नफ़्सों पर	शहादत देने वाले

©AL-HUDA INTERNATIONAL WELFARE FOUNDATION

وَفِي النَّارِ	هُمْ	خٰلِدُوْنَ ⑰	اِنَّمَا	يَعْمُرُ	مَسٰجِدَ	اللّٰهِ	مَنْ
और आग में	वो	हमेशा रहने वाले हैं	बेशक	आबाद करता है	मस्जिदें	अल्लाह की	वो जो

اٰمَنَ	بِاللّٰهِ	وَالْيَوْمِ الْاٰخِرِ	وَاَقَامَ	الصَّلٰوةَ	وَاٰتَى	الزَّكٰوةَ	وَلَمْ
ईमान लाए	अल्लाह पर	और आख़िरी दिन पर	और वो क़ायम करे	नमाज़	और अदा करे	ज़कात	और ना

يَخْشَ	اِلَّا	اللّٰهَ	فَعَسٰٓى	اُولٰٓئِكَ	اَنْ	يَّكُوْنُوْا	مِنَ الْمُهْتَدِيْنَ ⑱
वो डरे	सिवाए	अल्लाह के	तो उम्मीद है	ये लोग	कि	वो होंगे	हिदायत पाने वालें में से

اَجَعَلْتُمْ	سِقَايَةَ	الْحَآجِّ	وَعِمَارَةَ	الْمَسْجِدِ	الْحَرَامِ	كَمَنْ
क्या बना लिया तुमने	पानी पिलाना	हाजियों को	और आबाद करना	मस्जिदे	हराम को	मानिंद उसके जो

اٰمَنَ	بِاللّٰهِ	وَالْيَوْمِ الْاٰخِرِ	وَجٰهَدَ	فِيْ سَبِيْلِ اللّٰهِ ط	لَا يَسْتَوٗنَ
ईमान लाया	अल्लाह पर	और आख़िरी दिन पर	और उसने जिहाद किया	अल्लाह के रास्ते में	नहीं वो बराबर हो सकते

عِنْدَ اللّٰهِ ط	وَاللّٰهُ	لَا يَهْدِي	الْقَوْمَ	الظّٰلِمِيْنَ ⑲	اَلَّذِيْنَ	اٰمَنُوْا
अल्लाह के नज़दीक	और अल्लाह	नहीं हिदायत देता	उन लोगों को	जो ज़ालिम हैं	वो जो	ईमान लाए

وقف لازم

وَهَاجَرُوْا	وَجٰهَدُوْا	فِيْ سَبِيْلِ اللّٰهِ	بِاَمْوَالِهِمْ	وَاَنْفُسِهِمْ لا	اَعْظَمُ
और उन्होंने हिजरत की	और उन्होंने जिहाद किया	अल्लाह के रास्ते में	अपने मालों से	और अपनी जानों से	ज़्यादा बड़े है

دَرَجَةً	عِنْدَ اللّٰهِ ط	وَاُولٰٓئِكَ	هُمُ	الْفَآئِزُوْنَ ⑳	يُبَشِّرُهُمْ	رَبُّهُمْ
दरजे में	अल्लाह के नज़दीक	और यही लोग हैं	वो	जो कामयाब होने वाले हैं	ख़ुशख़बरी देता है उन्हें	रब उनका

بِرَحْمَةٍ	مِّنْهُ	وَرِضْوَانٍ	وَّجَنّٰتٍ	لَّهُمْ	فِيْهَا	نَعِيْمٌ	مُّقِيْمٌ ㉑ لا
रहमत की	अपनी तरफ़ से	और रज़ामंदी की	और बाग़ात की	उनके लिए	उनमें	नेअमतें हैं	क़ायम रहने वाली

خٰلِدِيْنَ	فِيْهَآ	اَبَدًا ط	اِنَّ	اللّٰهَ	عِنْدَهٗٓ	اَجْرٌ	عَظِيْمٌ ㉒
हमेशा रहने वाले हैं	उनमें	हमेशा-हमेशा	बेशक	अल्लाह	उसके पास	अजर है	बहुत बड़ा

© AL-HUDA INTERNATIONAL WELFARE FOUNDATION

يٰۤاَيُّهَا الَّذِيْنَ	اٰمَنُوْا	لَا تَتَّخِذُوْۤا	اٰبَآءَكُمْ	وَاِخْوَانَكُمْ	اَوْلِيَآءَ
ऐ लोगो जो	ईमान लाए हो	ना तुम बनाओ	अपने आबा ओ अजदाद को	और अपने भाईयों को	दोस्त

اِنِ	اسْتَحَبُّوا	الْكُفْرَ	عَلَى الْاِيْمَانِ ؕ	وَمَنْ	يَّتَوَلَّهُمْ	مِّنْكُمْ
अगर	वो तरजीह दें	कुफ़्र को	ईमान पर	और जो कोई	दोस्त रखेगा उन्हें	तुम में से

فَاُولٰٓئِكَ	هُمُ	الظّٰلِمُوْنَ (23)	قُلْ	اِنْ	كَانَ	اٰبَآؤُكُمْ	وَاَبْنَآؤُكُمْ
तो यही लोग हैं	वो	जो ज़ालिम हैं	कह दीजिए	अगर	हैं	आबा ओ अजदाद तुम्हारे	और बेटे तुम्हारे

وَاِخْوَانُكُمْ	وَاَزْوَاجُكُمْ	وَعَشِيْرَتُكُمْ	وَاَمْوَالُ	اقْتَرَفْتُمُوْهَا
और भाई तुम्हारे	और बीवियां तुम्हारी	और ख़ानदान तुम्हारे	और माल	कमाया तुमने जिन्हें

وَتِجَارَةٌ	تَخْشَوْنَ	كَسَادَهَا	وَمَسٰكِنُ	تَرْضَوْنَهَآ	اَحَبَّ
और तिजारत	तुम डरते हो	उसके मंदा होने से	और घर	तुम पसंद करते हो जिन्हें	ज़्यादा महबूब हैं

اِلَيْكُمْ	مِّنَ اللّٰهِ	وَرَسُوْلِهٖ	وَجِهَادٍ	فِيْ سَبِيْلِهٖ	فَتَرَبَّصُوْا	حَتّٰى
तरफ़ तुम्हारे	अल्लाह से	और उसके रसूल से	और जिहाद से	उसके रास्ते में	तो इंतिज़ार करो	यहां तक कि

ع 3 8 9

يَاْتِيَ	اللّٰهُ	بِاَمْرِهٖ ؕ	وَاللّٰهُ	لَا يَهْدِي	الْقَوْمَ	الْفٰسِقِيْنَ (24) ع	لَقَدْ
ले आए	अल्लाह	फ़ैसला अपना	और अल्लाह	नहीं वो हिदायत देता	उन लोगों को	जो फ़ासिक़ हैं	अलबत्ता तहक़ीक़

نَصَرَكُمُ	اللّٰهُ	فِيْ مَوَاطِنَ	كَثِيْرَةٍ ۙ	وَّيَوْمَ حُنَيْنٍ ۙ	اِذْ	اَعْجَبَتْكُمْ
मदद की तुम्हारी	अल्लाह ने	जगहों में	बहुत सी	और हुनैन के दिन	जब	भली लगी तुम्हें

كَثْرَتُكُمْ	فَلَمْ	تُغْنِ	عَنْكُمْ	شَيْئًا	وَّضَاقَتْ	عَلَيْكُمُ	الْاَرْضُ
कसरत तुम्हारी	पस ना	उसने फ़ायदा दिया	तुम्हें	कुछ भी	और तंग हो गई	तुम पर	ज़मीन

بِمَا	رَحُبَتْ	ثُمَّ	وَلَّيْتُمْ	مُّدْبِرِيْنَ (25) ج	ثُمَّ	اَنْزَلَ	اللّٰهُ
बावजूद उसके जो	वो कुशादा थी	फिर	फिर गए तुम	पीठ फेर कर	फिर	उतारी	अल्लाह ने

AL-HUDA INTERNATIONAL WELFARE FOUNDATION

سَكِيْنَتَهٗ	عَلٰى رَسُوْلِهٖ	وَعَلَى الْمُؤْمِنِيْنَ	وَاَنْزَلَ	جُنُوْدًا	لَّمْ
सकीनत अपनी	अपने रसूल पर	और मोमिनों पर	और उसने उतारे	ऐसे लश्कर	नहीं

تَرَوْهَا	وَعَذَّبَ	الَّذِيْنَ	كَفَرُوْا ط	وَذٰلِكَ	جَزَآءُ	الْكٰفِرِيْنَ (26)
देखा तुमने उन्हें	और उसने अज़ाब दिया	उनको जिन्होंने	कुफ़्र किया	और यही है	बदला	काफ़िरों का

ثُمَّ	يَتُوْبُ	اللّٰهُ	مِنْۢ بَعْدِ	ذٰلِكَ	عَلٰى مَنْ	يَّشَآءُ ط	وَاللّٰهُ	غَفُوْرٌ
फिर	मेहरबान होगा	अल्लाह	बाद	इसके	जिस पर	वो चाहेगा	और अल्लाह	बहुत बख़्शने वाला है

رَّحِيْمٌ (27)	يٰۤاَيُّهَا الَّذِيْنَ	اٰمَنُوْۤا	اِنَّمَا	الْمُشْرِكُوْنَ	نَجَسٌ	فَلَا
निहायत रहम करने वाला है	ऐ लोगो जो	ईमान लाए हो	बेशक	मुशरिकीन	नापाक हैं	तो ना

يَقْرَبُوا	الْمَسْجِدَ	الْحَرَامَ	بَعْدَ	عَامِهِمْ هٰذَا ج	وَاِنْ	خِفْتُمْ
वो क़रीब आएं	मस्जिदे	हराम के	बाद	अपने इस साल के	और अगर	ख़ौफ़ हो तुम्हें

عَيْلَةً	فَسَوْفَ	يُغْنِيْكُمُ	اللّٰهُ	مِنْ فَضْلِهٖۤ	اِنْ	شَآءَ ط	اِنَّ
मुफ़लिसी का	तो अनक़रीब	ग़नी कर देगा तुम्हें	अल्लाह	अपने फ़ज़्ल से	अगर	वो चाहे	बेशक

اللّٰهَ	عَلِيْمٌ	حَكِيْمٌ (28)	قَاتِلُوا	الَّذِيْنَ	لَا يُؤْمِنُوْنَ	بِاللّٰهِ
अल्लाह	ख़ूब इल्म वाला है	बहुत हिक्मत वाला है	जंग करो	उनसे जो	नहीं वो ईमान रखते	अल्लाह पर

وَلَا	بِالْيَوْمِ الْاٰخِرِ	وَلَا	يُحَرِّمُوْنَ	مَا	حَرَّمَ	اللّٰهُ	وَرَسُوْلُهٗ
और ना	आख़िरी दिन पर	और नहीं	वो हराम समझते	जो	हराम किया	अल्लाह ने	और उसके रसूल ने

وَلَا	يَدِيْنُوْنَ	دِيْنَ	الْحَقِّ	مِنَ الَّذِيْنَ	اُوْتُوا	الْكِتٰبَ	حَتّٰى
और नहीं	वो दीन बनाते	दीन	हक़ को	उनमें से जो	दिए गए	किताब	यहां तक कि

يُعْطُوا	الْجِزْيَةَ	عَنْ يَّدٍ	وَّهُمْ	صٰغِرُوْنَ (29) ع	وَقَالَتِ	الْيَهُوْدُ
वो दे दें	जिज़्या के	हाथ से	इस हाल में कि वो	ज़लील हों	और कहा	यहूद ने

ع 4 5 10

عُزَيْرُ ۨ	ابْنُ	اللّٰهِ	وَقَالَتِ	النَّصٰرَى	الْمَسِيْحُ	ابْنُ	اللّٰهِ ؕ	ذٰلِكَ
उज़ैर	बेटे हैं	अल्लाह के	और कहा	नसारा ने	मसीह	बेटे हैं	अल्लाह के	ये

قَوْلُهُمْ	بِاَفْوَاهِهِمْ ۚ	يُضَاهِـُٔوْنَ	قَوْلَ	الَّذِيْنَ	كَفَرُوْا
बात है उनकी	उनके मुंहों से	वो नक़ल करते हैं	बात	उनकी जिन्होंने	कुफ़्र किया

مِنْ قَبْلُ ؕ	قٰتَلَهُمُ	اللّٰهُ ۚ	اَنّٰى	يُؤْفَكُوْنَ ﴿30﴾	اِتَّخَذُوْٓا	اَحْبَارَهُمْ
इस से पहले	हलाक करे उन्हें	अल्लाह	कहां से	वो फेरे जाते हैं	उन्होंने बना लिया	अपने उलमा को

وَرُهْبَانَهُمْ	اَرْبَابًا	مِّنْ دُوْنِ	اللّٰهِ	وَالْمَسِيْحَ ابْنَ مَرْيَمَ ۚ	وَمَآ
और अपने राहिबों को	(मुख़्तलिफ़) रब	सिवाय	अल्लाह के	और मसीह इब्ने मरयम को	हालांकि नहीं

اُمِرُوْٓا	اِلَّا	لِيَعْبُدُوْٓا	اِلٰهًا	وَّاحِدًا ۚ	لَآ	اِلٰهَ	اِلَّا	هُوَ ؕ
वो हुक्म दिए गए	मगर	ये कि वो इबादत करें	इलाह की	एक ही	नहीं	कोई इलाह (बरहक़)	मगर	वो ही

سُبْحٰنَهٗ	عَمَّا	يُشْرِكُوْنَ ﴿31﴾	يُرِيْدُوْنَ	اَنْ	يُّطْفِـُٔوْا	نُوْرَ	اللّٰهِ
पाक है वो	उससे जो	वो शरीक ठहराते हैं	वो चाहते हैं	कि	वो बुझा दें	नूर	अल्लाह का

بِاَفْوَاهِهِمْ	وَيَاْبَى	اللّٰهُ	اِلَّآ	اَنْ	يُّتِمَّ	نُوْرَهٗ	وَلَوْ	كَرِهَ
अपने मुंहों से	और इंकार करता है	अल्लाह	मगर	ये कि	वो पूरा करे	अपने नूर को	और अगरचे	नापसंद करें

الْكٰفِرُوْنَ ﴿32﴾	هُوَ	الَّذِيْٓ	اَرْسَلَ	رَسُوْلَهٗ	بِالْهُدٰى	وَدِيْنِ	الْحَقِّ
काफ़िर	वो ही है	जिसने	भेजा	अपने रसूल को	साथ हिदायत	और दीने	हक़ के

النصف

لِيُظْهِرَهٗ	عَلَى الدِّيْنِ	كُلِّهٖ ۙ	وَلَوْ	كَرِهَ	الْمُشْرِكُوْنَ ﴿33﴾	يٰٓاَيُّهَا
ताकि वो ग़ालिब कर दे उसे	दीन पर	सब के सब	और अगरचे	नापसंद करें	मुशरिक	ऐ

الَّذِيْنَ	اٰمَنُوْٓا	اِنَّ	كَثِيْرًا	مِّنَ الْاَحْبَارِ	وَالرُّهْبَانِ	لَيَاْكُلُوْنَ
लोगो जो	ईमान लाए हो	बेशक	बहुत से	उलमा में से	और राहिबों में से	अलबत्ता खाते हैं

AL-HUDA INTERNATIONAL WELFARE FOUNDATION

اَمْوَالَ	النَّاسِ	بِالْبَاطِلِ	وَيَصُدُّوْنَ	عَنْ سَبِيْلِ اللّٰهِ ؕ	وَالَّذِيْنَ
माल	लोगों के	नाहक़	और वो रोकते हैं	अल्लाह के रास्ते से	और वो जो

يَكْنِزُوْنَ	الذَّهَبَ	وَالْفِضَّةَ	وَلَا	يُنْفِقُوْنَهَا	فِيْ سَبِيْلِ اللّٰهِ ۙ
जमा करते हैं	सोना	और चांदी	और नहीं	वो ख़र्च करते उसे	अल्लाह के रास्ते में

فَبَشِّرْهُمْ	بِعَذَابٍ	اَلِيْمٍ ۙ (34)	يَّوْمَ	يُحْمٰى	عَلَيْهَا	فِيْ نَارِ
पस ख़ुशख़बरी दे दीजिए उन्हें	अज़ाब	दर्दनाक की	जिस दिन	तपाया जाएगा	उस (माल) को	आग में

جَهَنَّمَ	فَتُكْوٰى	بِهَا	جِبَاهُهُمْ	وَجُنُوْبُهُمْ	وَظُهُوْرُهُمْ ؕ
जहन्नम की	फिर दाग़ी जाऐंगी	साथ उसके	पेशानियां उनकी	और पहलू उनके	और पुश्तें उनकी

هٰذَا	مَا	كَنَزْتُمْ	لِاَنْفُسِكُمْ	فَذُوْقُوْا	مَا	كُنْتُمْ	تَكْنِزُوْنَ (35)
ये है	जो	जमा किया तुमने	अपने नफ़्सों के लिए	पस मज़ा चखो	जो	थे तुम	जमा करते

اِنَّ	عِدَّةَ	الشُّهُوْرِ	عِنْدَ اللّٰهِ	اثْنَا عَشَرَ	شَهْرًا	فِيْ كِتٰبِ اللّٰهِ
बेशक	गिनती	महीनों की	अल्लाह के नज़दीक	बारह	महीने है	अल्लाह की किताब में

يَوْمَ	خَلَقَ	السَّمٰوٰتِ	وَالْاَرْضَ	مِنْهَآ	اَرْبَعَةٌ	حُرُمٌ ؕ	ذٰلِكَ
जिस दिन	उसने पैदा किया	आसमानों	और ज़मीन को	उनमें से	चार	हुरमत वाले हैं	ये है

الدِّيْنُ	الْقَيِّمُ ۙ	فَلَا	تَظْلِمُوْا	فِيْهِنَّ	اَنْفُسَكُمْ	وَقَاتِلُوا
दीन	दुरुस्त	पस ना	तुम ज़ुल्म करो	इनमें	अपने नफ़्सों पर	और जंग करो

الْمُشْرِكِيْنَ	كَآفَّةً	كَمَا	يُقَاتِلُوْنَكُمْ	كَآفَّةً ؕ	وَاعْلَمُوْٓا	اَنَّ
मुशरिकीन से	इकट्ठे	जैसा कि	वो जंग करते हैं तुमसे	इकट्ठे	और जान लो	बेशक

اللّٰهَ	مَعَ	الْمُتَّقِيْنَ (36)	اِنَّمَا	النَّسِيْٓءُ	زِيَادَةٌ	فِي الْكُفْرِ
अल्लाह	साथ है	मुत्तक़ी लोगों के	बेशक	महीनों को आगे-पीछे करना	ज़्यादती है	कुफ़्र में

© AL-HUDA INTERNATIONAL WELFARE FOUNDATION

يُضَلُّ	بِهِ	الَّذِيْنَ	كَفَرُوْا	يُحِلُّوْنَهٗ	عَامًا	وَّيُحَرِّمُوْنَهٗ
गुमराह किए जाते हैं	साथ इसके	वो जिन्होंने	कुफ़्र किया	वो हलाल करते हैं उसे	एक साल	और वो हराम करते हैं उसे

عَامًا	لِّيُوَاطِــُٔوْا	عِدَّةَ	مَا	حَرَّمَ	اللّٰهُ	فَيُحِلُّوْا	مَا
एक साल	ताकि वो दुरुस्त कर लें	गिनती	उनकी जो	हराम ठहराए	अल्लाह ने	पस वो हलाल करते हैं	जो

حَرَّمَ	اللّٰهُ ؕ	زُيِّنَ	لَهُمْ	سُوْٓءُ	اَعْمَالِهِمْ ؕ	وَاللّٰهُ
हराम किया	अल्लाह ने	मुज़य्यन कर दिए गए	उनके लिए	बुरे	आमाल उनके	और अल्लाह

ع 5 8 11

لَا يَهْدِی	الْقَوْمَ	الْكٰفِرِيْنَ ﴿37﴾ ع	يٰٓاَيُّهَا الَّذِيْنَ	اٰمَنُوْا	مَا	لَكُمْ	اِذَا
नहीं हिदायत देता	उन लोगों को	जो काफ़िर हैं	ऐ लोगो जो	ईमान लाए हो	क्या है	तुम्हें	जब

قِيْلَ	لَكُمُ	انْفِرُوْا	فِیْ سَبِيْلِ اللّٰهِ	اثَّاقَلْتُمْ	اِلَى الْاَرْضِ ؕ	اَرَضِيْتُمْ
कहा जाता है	तुमसे	निकलो	अल्लाह के रास्ते में	बोझल हो जाते हो तुम	तरफ़ ज़मीन के	क्या राज़ी हो गए तुम

بِالْحَيٰوةِ	الدُّنْيَا	مِنَ الْاٰخِرَةِ ۚ	فَمَا	مَتَاعُ	الْحَيٰوةِ	الدُّنْيَا
ज़िंदगी पर	दुनिया की	आख़िरत के (मुक़ाबले में)	तो नहीं	सामान	ज़िंदगी का	दुनिया की

فِی الْاٰخِرَةِ	اِلَّا	قَلِيْلٌ ﴿38﴾	اِلَّا	تَنْفِرُوْا	يُعَذِّبْكُمْ	عَذَابًا
आख़िरत के (मुक़ाबले में)	मगर	बहुत थोड़ा	अगर नहीं	तुम निकलोगे	वो अज़ाब देगा तुम्हें	अज़ाब

اَلِيْمًا ۙ	وَّيَسْتَبْدِلْ	قَوْمًا	غَيْرَكُمْ	وَلَا	تَضُرُّوْهُ	شَيْـًٔا ؕ
दर्दनाक	और वो बदल देगा	कोई क़ौम	तुम्हारे इलावा	और नहीं	तुम ज़रर पहुंचा सकते उसे	कुछ भी

وَاللّٰهُ	عَلٰى	كُلِّ	شَیْءٍ	قَدِيْرٌ ﴿39﴾	اِلَّا	تَنْصُرُوْهُ	فَقَدْ	نَصَرَهُ
और अल्लाह	ऊपर	हर	चीज़ के	ख़ूब क़ुदरत रखने वाला है	अगर नहीं	तुम मदद करोगे उसकी	तो तहक़ीक़	मदद की उसकी

اللّٰهُ	اِذْ	اَخْرَجَهُ	الَّذِيْنَ	كَفَرُوْا	ثَانِیَ	اثْنَيْنِ	اِذْ هُمَا
अल्लाह ने	जब	निकाला उसे	उन लोगों ने जिन्होंने	कुफ़्र किया	वो दूसरा (था)	दो में	जब वो दोनों

© AL-HUDA INTERNATIONAL WELFARE FOUNDATION

فِي الْغَارِ	إِذْ	يَقُولُ	لِصَاحِبِهِ	لَا تَحْزَنْ	إِنَّ	اللَّهَ	مَعَنَا ج
ग़ार में थे	जब	वो कह रहा था	अपने साथी से	ना तुम ग़म करो	बेशक	अल्लाह	हमारे साथ है

فَأَنْزَلَ	اللَّهُ	سَكِينَتَهُ	عَلَيْهِ	وَأَيَّدَهُ	بِجُنُودٍ	لَمْ	تَرَوْهَا
तो उतारी	अल्लाह ने	सकीनत अपनी	उस पर	और उसने ताईद की उसकी	ऐसे लश्करों से	नहीं	तुमने देखा उन्हें

وَجَعَلَ	كَلِمَةَ	الَّذِينَ	كَفَرُوا	السُّفْلَىٰ ط	وَكَلِمَةُ	اللَّهِ	هِيَ
और कर दिया	बात को	उनकी जिन्होंने	कुफ़्र किया	पस्त	और बात	अल्लाह की	वो ही

الْعُلْيَا ط	وَاللَّهُ	عَزِيزٌ	حَكِيمٌ (40)	انْفِرُوا	خِفَافًا	وَثِقَالًا
बुलंद है	और है अल्लाह	बहुत ज़बरदस्त	ख़ूब हिक्मत वाला	निकलो	हल्के	और बोझल

وَجَاهِدُوا	بِأَمْوَالِكُمْ	وَأَنْفُسِكُمْ	فِي سَبِيلِ اللَّهِ ط	ذَٰلِكُمْ	خَيْرٌ
और जिहाद करो	साथ अपने मालों	और अपने नफ़्सों के	अल्लाह के रास्ते में	यह बात	बेहतर है

لَكُمْ	إِنْ	كُنْتُمْ	تَعْلَمُونَ (41)	لَوْ	كَانَ	عَرَضًا	قَرِيبًا	وَسَفَرًا
तुम्हारे लिए	अगर	हो तुम	तुम जानते	अगर	होता	सामान	क़रीब का	और सफ़र

قَاصِدًا	لَاتَّبَعُوكَ	وَلَٰكِنْ	بَعُدَتْ	عَلَيْهِمُ	الشُّقَّةُ ط
दर्मियाना	अलबत्ता वो पैरवी करते आपकी	और लेकिन	दूर हो गई	उन पर	मुसाफ़त

وَسَيَحْلِفُونَ	بِاللَّهِ	لَوِ	اسْتَطَعْنَا	لَخَرَجْنَا	مَعَكُمْ ج	يُهْلِكُونَ
और अनक़रीब वो क़समें खाएंगे	अल्लाह की	अगर	इस्तिताअत रखते हम	अलबत्ता निकलते हम	साथ तुम्हारे	वो हलाक कर रहे हैं

ع 6 5 12

أَنْفُسَهُمْ ج	وَاللَّهُ	يَعْلَمُ	إِنَّهُمْ	لَكَاذِبُونَ (42) ع	عَفَا	اللَّهُ	عَنْكَ ج
अपने नफ़्सों को	और अल्लाह	जानता है	बेशक वो	अलबत्ता झूठे हैं	माफ़ कर दिया	अल्लाह ने	आपको

لِمَ	أَذِنْتَ	لَهُمْ	حَتَّىٰ	يَتَبَيَّنَ	لَكَ	الَّذِينَ	صَدَقُوا
क्यों	इजाज़त दी आपने	उन्हें	यहां तक कि	ज़ाहिर हो जाते	आपके लिए	वो जिन्होंने	सच कहा

© AL-HUDA INTERNATIONAL WELFARE FOUNDATION

بِاللّٰهِ	يُؤْمِنُوْنَ	الَّذِيْنَ	لَا يَسْتَاْذِنُكَ	الْكٰذِبِيْنَ ﴿43﴾	وَتَعْلَمَ
अल्लाह पर	ईमान लाते हैं	वो जो	नहीं इजाज़त मांगते आपसे	झूठों को	और आप जान लेते

وَاللّٰهُ	وَاَنْفُسِهِمْ ؕ	بِاَمْوَالِهِمْ	يُّجَاهِدُوْا	اَنْ	وَالْيَوْمِ الْاٰخِرِ
और अल्लाह	और अपनी जानों के	साथ अपने मालों	वो जिहाद करें	कि	और आख़िरी दिन पर

بِاللّٰهِ	لَا يُؤْمِنُوْنَ	الَّذِيْنَ	يَسْتَاْذِنُكَ	اِنَّمَا	بِالْمُتَّقِيْنَ ﴿44﴾	عَلِيْمٌۢ
अल्लाह पर	नहीं वो ईमान रखते	वो जो	इजाज़त मांगते हैं आपसे	बेशक	मुत्तक़ी लोगों को	ख़ूब जानने वाला है

يَتَرَدَّدُوْنَ ﴿45﴾	فِيْ رَيْبِهِمْ	فَهُمْ	قُلُوْبُهُمْ	وَارْتَابَتْ	وَالْيَوْمِ الْاٰخِرِ
मुतरद्दिद/हैरान हैं	अपने शक में	पस वो	दिल उनके	और शक करते हैं	और आख़िरी दिन पर

كَرِهَ	وَّلٰكِنْ	عُدَّةً	لَهٗ	لَاَعَدُّوْا	الْخُرُوْجَ	اَرَادُوا	وَلَوْ
नापसंद किया	और लेकिन	साज़ो सामान	उसके लिए	ज़रूर वो तैयार करते	निकलने का	वो इरादा करते	और अगर

مَعَ الْقٰعِدِيْنَ ﴿46﴾	اقْعُدُوْا	وَقِيْلَ	فَثَبَّطَهُمْ	انْۢبِعَاثَهُمْ	اللّٰهُ
साथ बैठने वालों के	बैठ जाओ	और कहा गया	तो उसने रोक दिया इन्हें	उठना इनका	अल्लाह ने

وَّلَا۟اَوْضَعُوْا	خَبَالًا	اِلَّا	زَادُوْكُمْ	مَّا	فِيْكُمْ	خَرَجُوْا	لَوْ
और अलबत्ता वो (घोड़े) दौड़ाते	ख़राबी में	मगर	वो ज़्यादा करते तुम्हें	ना	तुम में	वो निकलते	अगर

لَهُمْ ؕ	سَمّٰعُوْنَ	وَفِيْكُمْ	الْفِتْنَةَ ۚ	يَبْغُوْنَكُمُ	خِلٰلَكُمْ
उनके लिए	सुनने वाले (जासूस) हैं	और तुम में	फ़ितने की	वो तलाश में रहते तुम में	दर्मियान तुम्हारे

مِنْ قَبْلُ	الْفِتْنَةَ	ابْتَغَوُا	لَقَدِ	بِالظّٰلِمِيْنَ ﴿47﴾	عَلِيْمٌۢ	وَاللّٰهُ
इससे पहले	फ़ितना	उन्होंने (डालना) चाहा	अलबत्ता तहक़ीक़	ज़ालिमों को	ख़ूब जानने वाला है	और अल्लाह

اَمْرُ	وَظَهَرَ	الْحَقُّ	جَآءَ	حَتّٰى	الْاُمُوْرَ	لَكَ	وَقَلَّبُوْا
हुक्म	और ज़ाहिर हो गया	हक़	आ गया	यहां तक कि	मामलात	आपके लिए	और उलट-पुलट किए

© AL HUDA INTERNATIONAL WELFARE FOUNDATION

اللّٰهِ	وَهُمْ	كٰرِهُوْنَ ﴿48﴾	وَمِنْهُمْ	مَّنْ	يَّقُوْلُ	ائْذَنْ	لِّيْ
अल्लाह का	जबकि वो	नापसंद करने वाले थे	और उनमें से कोई है	जो	कहता है	इजाज़त दीजिए	मुझे

وَلَا	تَفْتِنِّيْ ؕ	اَلَا	فِي الْفِتْنَةِ	سَقَطُوْا ؕ	وَاِنَّ	جَهَنَّمَ	لَمُحِيْطَةٌۢ
और ना	आप फ़ितने में डालिए मुझे	ख़बरदार	फ़ितने में तो	वो पड़ चुके हैं	और बेशक	जहन्नम	अलबत्ता घेरने वाली है

بِالْكٰفِرِيْنَ ﴿49﴾	اِنْ	تُصِبْكَ	حَسَنَةٌ	تَسُؤْهُمْ ۚ	وَاِنْ	تُصِبْكَ
काफ़िरों को	अगर	पहुंचती है आपको	कोई भलाई	वो बुरी लगती है उन्हें	और अगर	पहुंचती है आपको

مُصِيْبَةٌ	يَّقُوْلُوْا	قَدْ	اَخَذْنَآ	اَمْرَنَا	مِنْ قَبْلُ	وَيَتَوَلَّوْا
कोई मुसीबत	वो कहते हैं	तहक़ीक़	संभाल लिया हमने	मामला अपना	पहले से	और वो मुंह मोड़ जाते हैं

وَّهُمْ	فَرِحُوْنَ ﴿50﴾	قُلْ	لَّنْ	يُّصِيْبَنَآ	اِلَّا	مَا	كَتَبَ
इस हाल में कि वो	ख़ुश होने वाले हैं	कह दीजिए	हरगिज़ नहीं	पहुचेगा हमें	मगर (वही)	जो	लिख दिया

اللّٰهُ	لَنَا ۚ	هُوَ	مَوْلٰىنَا ۚ	وَعَلَى اللّٰهِ	فَلْيَتَوَكَّلِ	الْمُؤْمِنُوْنَ ﴿51﴾
अल्लाह ने	हमारे लिए	वो	मौला है हमारा	और अल्लाह ही पर	पस चाहिए कि तवक्कल करें	ईमान लाने वाले

قُلْ	هَلْ	تَرَبَّصُوْنَ	بِنَآ	اِلَّآ	اِحْدَى	الْحُسْنَيَيْنِ ؕ	وَنَحْنُ
कह दीजिए	नहीं	तुम इंतिज़ार करते	हमारे बारे में	मगर	एक का	दो भलाईयों में से	और हम

نَتَرَبَّصُ	بِكُمْ	اَنْ	يُّصِيْبَكُمُ	اللّٰهُ	بِعَذَابٍ	مِّنْ عِنْدِهٖٓ	اَوْ
हम इंतिज़ार करते हैं	तुम्हारे बारे में	कि	पहुंचाए तुम्हें	अल्लाह	कोई अज़ाब	अपने पास से	या

بِاَيْدِيْنَا ۖ	فَتَرَبَّصُوْٓا	اِنَّا	مَعَكُمْ	مُّتَرَبِّصُوْنَ ﴿52﴾	قُلْ	اَنْفِقُوْا
हमारे हाथों से	पस तुम इंतिज़ार करो	बेशक हम	साथ तुम्हारे	इंतिज़ार करने वाले हैं	कह दीजिए	ख़र्च करो

طَوْعًا	اَوْ	كَرْهًا	لَّنْ	يُّتَقَبَّلَ	مِنْكُمْ ؕ	اِنَّكُمْ	كُنْتُمْ	قَوْمًا
ख़ुशी से	या	ना ख़ुशी से	हरगिज़ नहीं	वो क़ुबूल किया जाएगा	तुमसे	बेशक तुम	हो तुम	लोग

AL HUDA INTERNATIONAL WELFARE FOUNDATION

فٰسِقِيْنَ (53)	وَمَا	مَنَعَهُمْ	اَنْ	تُقْبَلَ	مِنْهُمْ	نَفَقٰتُهُمْ
नाफ़रमान	और नहीं	मानेअ हुआ उनके	कि	क़ुबूल किए जाएं	उनसे	सदक़ात उनके

اِلَّآ	اَنَّهُمْ	كَفَرُوْا	بِاللّٰهِ	وَبِرَسُوْلِهٖ	وَلَا	يَاْتُوْنَ	الصَّلٰوةَ
मगर	ये कि वो	उन्होने कुफ़्र किया	साथ अल्लाह के	और साथ उसके रसूल के	और नहीं	वो आते	नमाज़ को

اِلَّا	وَهُمْ	كُسَالٰى	وَلَا	يُنْفِقُوْنَ	اِلَّا	وَهُمْ	كٰرِهُوْنَ (54)
मगर	इस हाल में कि वो	सुस्त होते हैं	और नहीं	वो ख़र्च करते	मगर	इस हाल में कि वो	नापसंद करने वाले हैं

فَلَا	تُعْجِبْكَ	اَمْوَالُهُمْ	وَلَآ	اَوْلَادُهُمْ ؕ	اِنَّمَا	يُرِيْدُ	اللّٰهُ
पस ना	ताज्जुब में डालें आपको	माल उनके	और ना	औलाद उनकी	बेशक	चाहता है	अल्लाह

لِيُعَذِّبَهُمْ	بِهَا	فِى الْحَيٰوةِ	الدُّنْيَا	وَتَزْهَقَ	اَنْفُسُهُمْ	وَهُمْ
कि वो अज़ाब दे उन्हें	साथ इनके	ज़िंदगी में	दुनिया की	और निकलें	जानें उनकी	इस हाल में कि वो

كٰفِرُوْنَ (55)	وَيَحْلِفُوْنَ	بِاللّٰهِ	اِنَّهُمْ	لَمِنْكُمْ ؕ	وَمَا	هُمْ
काफ़िर हों	और वो क़समें खाते हैं	अल्लाह की	बेशक वो	अलबत्ता तुम में से हैं	हालांकि नहीं	वो

مِّنْكُمْ	وَلٰكِنَّهُمْ	قَوْمٌ	يَّفْرَقُوْنَ (56)	لَوْ	يَجِدُوْنَ	مَلْجَاً	اَوْ
तुम में से	और लेकिन वो	ऐसे लोग हैं	जो डरते हैं	अगर	वो पाएं	कोई जाए पनाह	या

مَغٰرٰتٍ	اَوْ	مُدَّخَلًا	لَّوَلَّوْا	اِلَيْهِ	وَهُمْ	يَجْمَحُوْنَ (57)
कोई ग़ार	या	कोई घुस बैठने की जगह	अलबत्ता वो मुड़ कर भाग जाएं	तरफ़ उसके	इस हाल में कि वो	वो सरपट दौड़ते हैं

وَمِنْهُمْ	مَّنْ	يَّلْمِزُكَ	فِى الصَّدَقٰتِ ۚ	فَاِنْ	اُعْطُوْا	مِنْهَا
और कुछ उनमें से हैं	जो	इल्ज़ाम लगाते हैं आप पर	सदक़ात के बारे में	फिर अगर	वो दिए जाएं	उनमें से

رَضُوْا	وَاِنْ	لَّمْ	يُعْطَوْا	مِنْهَآ	اِذَا	هُمْ	يَسْخَطُوْنَ (58)	وَلَوْ
वो राज़ी हो जाते हैं	और अगर	ना	वो दिए जाएं	उनमें से	तब	वो	नाराज़ हो जाते हैं	और काश

© AL-HUDA INTERNATIONAL WELFARE FOUNDATION

اَنَّهُمْ	رَضُوْا	مَآ	اٰتٰىهُمُ	اللّٰهُ	وَرَسُوْلُهٗ ۙ	وَقَالُوْا	حَسْبُنَا
ये कि वो	वो राज़ी हो जाते	उस पर जो	दिया उन्हें	अल्लाह ने	और उसके रसूल ने	और वो कहते	काफ़ी है हमें

اللّٰهُ	سَيُؤْتِيْنَا	اللّٰهُ	مِنْ فَضْلِهٖ	وَرَسُوْلُهٗٓ ۙ	اِنَّآ	اِلَى اللّٰهِ
अल्लाह	अनक़रीब देगा हमें	अल्लाह	अपने फ़ज़्ल से	और उसका रसूल(भी)	बेशक हम	तरफ़ अल्लाह के

رٰغِبُوْنَ ۟ (59)	اِنَّمَا	الصَّدَقٰتُ	لِلْفُقَرَآءِ	وَالْمَسٰكِيْنِ	وَالْعٰمِلِيْنَ
रग़बत करने वाले हैं	बेशक	सदक़ात तो	फ़ुक़रा के लिए हैं	और मिस्कीनों के लिए	और जो काम करने वाले हैं

ع 7 17 13

عَلَيْهَا	وَالْمُؤَلَّفَةِ	قُلُوْبُهُمْ	وَفِي الرِّقَابِ	وَالْغٰرِمِيْنَ
उन पर	और उल्फ़त दिलाए गए	दिल जिनके	और गर्दनों (के आज़ाद) करने में	और क़र्ज़दारों (के लिए)

وَفِيْ سَبِيْلِ اللّٰهِ	وَابْنِ السَّبِيْلِ ؕ	فَرِيْضَةً	مِّنَ اللّٰهِ ؕ	وَاللّٰهُ	عَلِيْمٌ
और अल्लाह के रास्ते में	और मुसाफ़िर/राहगीर (के लिए)	फ़रीज़ा है	अल्लाह की तरफ़ से	और अल्लाह	ख़ूब इल्म वाला है

حَكِيْمٌ (60)	وَمِنْهُمُ	الَّذِيْنَ	يُؤْذُوْنَ	النَّبِيَّ	وَيَقُوْلُوْنَ	هُوَ
ख़ूब हिक्मत वाला है	और कुछ उनमें से हैं	जो	अज़ियत देते हैं	नबी को	और वो कहते हैं	वो

اُذُنٌ ؕ	قُلْ	اُذُنُ	خَيْرٍ	لَّكُمْ	يُؤْمِنُ	بِاللّٰهِ	وَيُؤْمِنُ
कान है	कह दीजिए	कान है	भलाई का	तुम्हारे लिए	वो ईमान रखता है	अल्लाह पर	और वो एतमाद करता है

لِلْمُؤْمِنِيْنَ	وَرَحْمَةٌ	لِّلَّذِيْنَ	اٰمَنُوْا	مِنْكُمْ	وَالَّذِيْنَ	يُؤْذُوْنَ
मोमिनों पर	और रहमत है	उनके लिए जो	ईमान लाए	तुम में से	और वो जो	अज़ियत देते हैं

رَسُوْلَ اللّٰهِ	لَهُمْ	عَذَابٌ	اَلِيْمٌ (61)	يَحْلِفُوْنَ	بِاللّٰهِ	لَكُمْ
अल्लाह के रसूल को	उनके लिए	अज़ाब है	दर्दनाक	वो क़समें खाते हैं	अल्लाह की	तुम्हारे लिए

لِيُرْضُوْكُمْ ۚ	وَاللّٰهُ	وَرَسُوْلُهٗٓ	اَحَقُّ	اَنْ	يُّرْضُوْهُ	اِنْ
ताकि वो राज़ी करें तुम्हें	और अल्लाह	और उसका रसूल	ज़्यादा हक़दार है	कि	वो राज़ी करें उसे	अगर

الثلثة

كَانُوْا	مُؤْمِنِيْنَ (62)	اَلَمْ	يَعْلَمُوْٓا	اَنَّهٗ	مَنْ	يُّحَادِدِ	اللّٰهَ
हैं वो	ईमान लाने वाले	क्या नहीं	वो जानते	बेशक वो	जो	मुख़ालिफ़त करता है	अल्लाह की

وَرَسُوْلَهٗ	فَاَنَّ	لَهٗ	نَارَ	جَهَنَّمَ	خَالِدًا	فِيْهَا ؕ	ذٰلِكَ
और उसके रसूल की	तो बेशक	उसके लिए	आग है	जहन्नम की	हमेशा रहने वाला है	उसमें	ये

الْخِزْيُ	الْعَظِيْمُ (63)	يَحْذَرُ	الْمُنٰفِقُوْنَ	اَنْ	تُنَزَّلَ	عَلَيْهِمْ	سُوْرَةٌ
रुसवाई है	बहुत बड़ी	डरते हैं	मुनाफ़िक़	कि	उतारी जाए	उन पर	कोई सूरत

تُنَبِّئُهُمْ	بِمَا	فِيْ قُلُوْبِهِمْ ؕ	قُلِ	اسْتَهْزِءُوْا ۚ	اِنَّ	اللّٰهَ	مُخْرِجٌ
जो ख़बर दे उन्हें	उसकी जो	उनके दिलों में है	कह दीजिए	मज़ाक़ उड़ा लो	बेशक	अल्लाह	ज़ाहिर करने वाला है

مَّا	تَحْذَرُوْنَ (64)	وَلَئِنْ	سَاَلْتَهُمْ	لَيَقُوْلُنَّ	اِنَّمَا	كُنَّا	نَخُوْضُ
वो जिससे	तुम डरते हो	और अलबत्ता अगर	पूछो तुम उनसे	अलबत्ता वो ज़रूर कहेंगे	बेशक	थे हम	हम बहस करते

وَنَلْعَبُ ؕ	قُلْ	اَبِاللّٰهِ	وَاٰيٰتِهٖ	وَرَسُوْلِهٖ	كُنْتُمْ	تَسْتَهْزِءُوْنَ (65)
और हम दिल्लगी करते	कह दीजिए	क्या अल्लाह का	और उसकी आयात का	और उसके रसूल का	थे तुम	तुम मज़ाक़ उड़ाते

لَا تَعْتَذِرُوْا	قَدْ	كَفَرْتُمْ	بَعْدَ	اِيْمَانِكُمْ ؕ	اِنْ	نَّعْفُ
ना तुम उज़्र पेश करो	तहक़ीक़	कुफ़्र किया तुमने	बाद	अपने ईमान के	अगर	हम माफ़ कर दें

عَنْ طَآئِفَةٍ	مِّنْكُمْ	نُعَذِّبْ	طَآئِفَةًۢ	بِاَنَّهُمْ	كَانُوْا
एक गिरोह को	तुम में से	(तो) हम अज़ाब देंगे	एक गिरोह को	बवजह इसके कि वो	हैं वो

ع 8 7 14 وقف لازم

مُجْرِمِيْنَ (66) ع	اَلْمُنٰفِقُوْنَ	وَالْمُنٰفِقٰتُ	بَعْضُهُمْ	مِّنْ بَعْضٍ ۘ
मुजरिम	मुनाफ़िक़ मर्द	और मुनाफ़िक़ औरतें	बाज़ उनके	बाज़ से हैं

يَاْمُرُوْنَ	بِالْمُنْكَرِ	وَيَنْهَوْنَ	عَنِ الْمَعْرُوْفِ	وَيَقْبِضُوْنَ
वो हुक्म देते हैं	बुराई का	और वो रोकते हैं	भलाई से	और वो बंद रखते हैं

© AL-HUDA INTERNATIONAL WELFARE FOUNDATION

هُمُ	الْمُنٰفِقِيْنَ	اِنَّ	فَنَسِيَهُمْ ؕ	اللّٰهَ	نَسُوا	اَيْدِيَهُمْ ؕ
वो ही	मुनाफ़िक़ीन	बेशक	तो उसने भुला दिया उन्हें	अल्लाह को	वो भूल गए	अपने हाथों को

نَارَ	وَالْكُفَّارَ	وَالْمُنٰفِقٰتِ	الْمُنٰفِقِيْنَ	اللّٰهُ	وَعَدَ	الْفٰسِقُوْنَ (67)
आग का	और काफ़िरों से	और मुनाफ़िक़ औरतों से	मुनाफ़िक़ मर्दों से	अल्लाह ने	वादा किया	फ़ासिक़ / नाफ़रमान हैं

وَلَهُمْ	اللّٰهُ ج	وَلَعَنَهُمُ	حَسْبُهُمْ ج	هِيَ	فِيْهَا ؕ	خٰلِدِيْنَ	جَهَنَّمَ
और उनके लिए	अल्लाह ने	और लानत की उन पर	काफ़ी है उन्हें	वो ही	उस में	हमेशा रहने वाले हैं	जहन्नम की

مِنْكُمْ	اَشَدَّ	كَانُوْٓا	مِنْ قَبْلِكُمْ	كَالَّذِيْنَ	مُّقِيْمٌ (68) لا	عَذَابٌ
तुमसे	बहुत शदीद	थे वो	तुमसे पहले थे	उन लोगों की तरह जो	क़ायम रहने वाला	अज़ाब है

بِخَلَاقِهِمْ	فَاسْتَمْتَعُوْا	وَّاَوْلَادًا ؕ	اَمْوَالًا	وَّاَكْثَرَ	قُوَّةً
अपने हिस्से से	पस उन्होंने फ़ायदा उठाया	और औलाद में	माल में	और ज़्यादा थे	क़ुव्वत में

مِنْ قَبْلِكُمْ	الَّذِيْنَ	اسْتَمْتَعَ	كَمَا	بِخَلَاقِكُمْ	فَاسْتَمْتَعْتُمْ
तुमसे पहले थे	उन्होंने जो	फ़ायदा उठाया	जिस तरह	अपने हिस्से से	पस तुमने फ़ायदा उठाया

اَعْمَالُهُمْ	حَبِطَتْ	اُولٰٓئِكَ	خَاضُوْا ؕ	كَالَّذِيْ	وَخُضْتُمْ	بِخَلَاقِهِمْ
आमाल उनके	ज़ाया हो गए	यही लोग हैं	उन्होंने बहस की	जिस तरह	और बहस की तुमने	अपने हिस्से से

يَاْتِهِمْ	اَلَمْ	الْخٰسِرُوْنَ (69)	هُمُ	وَاُولٰٓئِكَ	وَالْاٰخِرَةِ ج	فِي الدُّنْيَا
आई उनके पास	क्या नहीं	जो ख़सारा पाने वाले हैं	वो	और यही लोग हैं	और आख़िरत में	दुनिया में

وَقَوْمِ اِبْرٰهِيْمَ	وَّثَمُوْدَ ۬ۙ	وَّعَادٍ	قَوْمِ نُوْحٍ	مِنْ قَبْلِهِمْ	الَّذِيْنَ	نَبَاُ
और क़ौमे इब्राहीम	और समूद	और आद	क़ौमे नूह	इनसे पहले थे	उनकी जो	ख़बर

فَمَا	بِالْبَيِّنٰتِ ج	رُسُلُهُمْ	اَتَتْهُمْ	وَالْمُؤْتَفِكٰتِ ؕ	وَاَصْحٰبِ مَدْيَنَ
पस नहीं	साथ वाज़ेह दलाइल के	रसूल उनके	आए उनके पास	और उल्टी हुई बस्तियों वाले	और मदयन वाले

© AL-HUDA INTERNATIONAL WELFARE FOUNDATION

يَظْلِمُوْنَ (70)	اَنْفُسَهُمْ	كَانُوْٓا	وَلٰكِنْ	لِيَظْلِمَهُمْ	اللّٰهُ	كَانَ
वो ज़ुल्म करते	अपनी ही जानों पर	थे वो	और लेकिन	कि वो ज़ुल्म करे उन पर	अल्लाह	है

وقف لازم

يَاْمُرُوْنَ	بَعْضٍ	اَوْلِيَآءُ	بَعْضُهُمْ	وَالْمُؤْمِنٰتُ	وَالْمُؤْمِنُوْنَ
वो हुक्म देते है	बाज़ के	दोस्त हैं	बाज़ उनके	और मोमिन औरतें	और मोमिन मर्द

وَيُؤْتُوْنَ	الصَّلٰوةَ	وَيُقِيْمُوْنَ	عَنِ الْمُنْكَرِ	وَيَنْهَوْنَ	بِالْمَعْرُوْفِ
और वो अदा करते हैं	नमाज़	और वो क़ायम करते हैं	बुराई से	और वो रोकते हैं	भलाई का

اللّٰهُ ط	سَيَرْحَمُهُمُ	اُولٰٓئِكَ	وَرَسُوْلَهٗ ط	اللّٰهَ	وَيُطِيْعُوْنَ	الزَّكٰوةَ
अल्लाह	ज़रूर रहम करेगा उन पर	यही लोग हैं	और उसके रसूल की	अल्लाह की	और वो इताअत करते हैं	ज़कात

وَالْمُؤْمِنٰتِ	الْمُؤْمِنِيْنَ	اللّٰهُ	وَعَدَ	حَكِيْمٌ (71)	عَزِيْزٌ	اللّٰهَ	اِنَّ
और मोमिन औरतों से	मोमिन मर्दों से	अल्लाह ने	वादा किया	ख़ूब हिक्मत वाला है	बहुत ज़बरदस्त है	अल्लाह	बेशक

وَمَسٰكِنَ	فِيْهَا	خٰلِدِيْنَ	الْاَنْهٰرُ	مِنْ تَحْتِهَا	تَجْرِيْ	جَنّٰتٍ
और घर	उनमें	हमेशा रहने वाले हैं	नहरें	उनके नीचे से	बहती हैं	बाग़ात का

هُوَ	ذٰلِكَ	اَكْبَرُ ط	مِّنَ اللّٰهِ	وَرِضْوَانٌ	عَدْنٍ ط	فِيْ جَنّٰتِ	طَيِّبَةً
वो	यही	सबसे बड़ी है	अल्लाह की तरफ़ से	और रज़ामंदी	अदन के	बाग़ात में	पाकीज़ा

ع 9 6 15

وَالْمُنٰفِقِيْنَ	الْكُفَّارَ	جَاهِدِ	النَّبِيُّ	يٰٓاَيُّهَا	الْعَظِيْمُ (72) ع	الْفَوْزُ
और मुनाफ़िक़ीन से	कुफ़्फ़ार	जिहाद कीजिए	नबी	ऐ	बहुत बड़ी	कामयाबी है

الْمَصِيْرُ (73)	وَبِئْسَ	جَهَنَّمُ ط	وَمَاْوٰىهُمْ	عَلَيْهِمْ ط	وَاغْلُظْ
ठिकाना है	और बहुत ही बुरा	जहन्नम है	और ठिकाना उनका	उन पर	और सख़्ती कीजिए

الْكُفْرِ	كَلِمَةَ	قَالُوْا	وَلَقَدْ	قَالُوْا ط	مَا	بِاللّٰهِ	يَحْلِفُوْنَ
कुफ़्र का	कलमा	उन्होंने कहा	हालाकि अलबत्ता तहक़ीक़	उन्होंने कहा	नहीं	अल्लाह की	वो क़समें खाते हैं

© AL-HUDA INTERNATIONAL WELFARE FOUNDATION

وَكَفَرُوْا	بَعْدَ	اِسْلَامِهِمْ	وَهَمُّوْا	بِمَا	لَمْ	يَنَالُوْا ج	وَمَا
और उन्होंने कुफ़्र किया	बाद	अपने इस्लाम के	और उन्होंने इरादा किया	उसका जो	नहीं	वो पा सके	और नहीं

نَقَمُوْٓا	اِلَّآ	اَنْ	اَغْنٰىهُمُ	اللّٰهُ	وَرَسُوْلُهٗ	مِنْ فَضْلِهٖ ج	فَاِنْ
उन्होंने इंतिक़ाम लिया	मगर	ये कि	ग़नी कर दिया उन्हें	अल्लाह ने	और उसके रसूल ने	अपने फ़ज़्ल से	फिर अगर

يَّتُوْبُوْا	يَكُ	خَيْرًا	لَّهُمْ ج	وَاِنْ	يَّتَوَلَّوْا	يُعَذِّبْهُمُ	اللّٰهُ
वो तौबा कर लें	होगा	बेहतर	उनके लिए	और अगर	वो मुंह मोड़ें	अज़ाब देगा उन्हें	अल्लाह

عَذَابًا	اَلِيْمًا لا	فِى الدُّنْيَا	وَالْاٰخِرَةِ ج	وَمَا	لَهُمْ	فِى الْاَرْضِ
अज़ाब	दर्दनाक	दुनिया में	और आख़िरत में	और ना होगा	उनके लिए	ज़मीन में

مِنْ وَّلِيٍّ	وَّلَا	نَصِيْرٍ (74)	وَمِنْهُمْ	مَّنْ	عٰهَدَ	اللّٰهَ	لَئِنْ
कोई दोस्त	और ना	कोई मददगार	और कुछ उनमें से वो हैं	जिन्होंने	अहद किया	अल्लाह से	अलबत्ता अगर

اٰتٰىنَا	مِنْ فَضْلِهٖ	لَنَصَّدَّقَنَّ	وَلَنَكُوْنَنَّ	مِنَ الصّٰلِحِيْنَ (75)
वो देगा हमें	अपने फ़ज़्ल से	अलबत्ता हम ज़रूर सदक़ा करेंगे	और अलबत्ता हम ज़रूर हो जाएंगे	नेक लोगों में से

فَلَمَّآ	اٰتٰىهُمْ	مِّنْ فَضْلِهٖ	بَخِلُوْا	بِهٖ	وَتَوَلَّوْا	وَّهُمْ
फिर जब	उसने दिया उन्हें	अपने फ़ज़्ल से	वो बुख़्ल करने लगे	साथ उसके	और वो मुंह मोड़ गए	इस हाल में कि वो

مُّعْرِضُوْنَ (76)	فَاَعْقَبَهُمْ	نِفَاقًا	فِيْ قُلُوْبِهِمْ	اِلٰى يَوْمِ
ऐराज़ करने वाले थे	तो उसने सज़ा दी उन्हें	निफ़ाक़ (डाल कर)	उनके दिलों में	उस दिन तक

يَلْقَوْنَهٗ	بِمَآ	اَخْلَفُوا	اللّٰهَ	مَا	وَعَدُوْهُ	وَبِمَا
वो मुलाक़ात करेंगे उससे	बवजह उसके जो	उन्होंने ख़िलाफ़ किया	अल्लाह से	जिसका	उन्होंने वादा किया था उससे	और बवजह उसके जो

كَانُوْا	يَكْذِبُوْنَ (77)	اَلَمْ	يَعْلَمُوْٓا	اَنَّ	اللّٰهَ	يَعْلَمُ	سِرَّهُمْ
थे वो	वो झूठ बोलते	क्या नहीं	वो जानते	बेशक	अल्लाह	जानता है	राज़ उनके

يَلْمِزُوْنَ	اَلَّذِيْنَ	الْغُيُوْبِ ﴿78﴾ ج	عَلَّامُ	اللّٰهَ	وَاَنَّ	وَنَجْوٰىهُمْ
वो ताना देते हैं	वो लोग जो	ग़ैबों को	ख़ूब जानने वाला है	अल्लाह	और बेशक	और सरगोशियां उनकी

لَا يَجِدُوْنَ	وَالَّذِيْنَ	فِي الصَّدَقٰتِ	مِنَ الْمُؤْمِنِيْنَ	الْمُطَّوِّعِيْنَ
नहीं वो पाते	और उनको (भी) जो	सदक़ात में	मोमिनों में से	ख़ुशी से देने वालों को

مِنْهُمْ ز	اللّٰهُ	سَخِرَ	مِنْهُمْ ط	فَيَسْخَرُوْنَ	جُهْدَهُمْ	اِلَّا
उनका	अल्लाह	मज़ाक़ उड़ाता है	उनका	तो वो मज़ाक़ उड़ाते हैं	अपनी मेहनत के	सिवाए

لَا تَسْتَغْفِرْ	اَوْ	لَهُمْ	اِسْتَغْفِرْ	اَلِيْمٌ ﴿79﴾	عَذَابٌ	وَلَهُمْ
ना आप बख़्शिश मांगिए	या	उनके लिए	आप बख़्शिश मांगिए	दर्दनाक	अज़ाब है	और उनके लिए

اللّٰهُ	يَّغْفِرَ	فَلَنْ	مَرَّةً	سَبْعِيْنَ	لَهُمْ	تَسْتَغْفِرْ	اِنْ	لَهُمْ ط
अल्लाह	माफ़ करेगा	पस हरगिज़ ना	बार	सत्तर	उनके लिए	आप बख़्शिश मांगेंगे	अगर	उनके लिए

وَاللّٰهُ	وَرَسُوْلِهٖ ط	بِاللّٰهِ	كَفَرُوْا	بِاَنَّهُمْ	ذٰلِكَ	لَهُمْ ط
और अल्लाह	और उसके रसूल का	अल्लाह का	कुफ़्र किया	बवजह उसके कि उन्होंने	ये	उन्हें

10 ع 8 16

بِمَقْعَدِهِمْ	الْمُخَلَّفُوْنَ	فَرِحَ	الْفٰسِقِيْنَ ﴿80﴾ ع	الْقَوْمَ	لَا يَهْدِي
अपने बैठ रहने पर	पीछे छोड़े जाने वाले	ख़ुश हो गए	जो फ़ासिक़ हैं	उन लोगों को	नहीं हिदायत देता

بِاَمْوَالِهِمْ	يُّجَاهِدُوْا	اَنْ	وَكَرِهُوْٓا	رَسُوْلِ اللّٰهِ	خِلٰفَ
साथ अपने मालों	वो जिहाद करें	कि	और उन्होंने नापसंद किया	अल्लाह के रसूल के	पीछे

نَارُ	قُلْ	فِي الْحَرِّ ط	لَا تَنْفِرُوْا	وَقَالُوْا	فِيْ سَبِيْلِ اللّٰهِ	وَاَنْفُسِهِمْ
आग	कह दीजिए	गर्मी में	ना तुम निकलो	और उन्होंने कहा	अल्लाह के रास्ते में	और अपनी जानों के

قَلِيْلًا	فَلْيَضْحَكُوْا	يَفْقَهُوْنَ ﴿81﴾	كَانُوْا	لَوْ	حَرًّا ط	اَشَدُّ	جَهَنَّمَ
बहुत थोड़ा	पस चाहिए कि वो हंसें	वो समझते	होते वो	काश कि	गर्मी के ऐतबार से	ज़्यादा शदीद है	जहन्नम की

AL-HUDA INTERNATIONAL WELFARE FOUNDATION

فَاِنۡ	يَكۡسِبُوۡنَ (82)	كَانُوۡا	بِمَا	جَزَآءًۢ	كَثِيۡرًا ۚ	وَّلۡيَبۡكُوۡا
फिर अगर	वो कमाई करते	थे वो	बवजह उसके जो	बदला है	बहुत ज़्यादा	और चाहिए कि वो रोऐं

لِلۡخُرُوۡجِ	فَاسۡتَاۡذَنُوۡكَ	مِّنۡهُمۡ	اِلٰى طَآٮِٕفَةٍ	اللّٰهُ	رَّجَعَكَ
निकलने के लिए	फिर वो इजाज़त तलब करें आपसे	उनमें से	तरफ़ एक गिरोह के	अल्लाह	वापस लौटा लाए आपको

عَدُوًّا ؕ	مَعِىَ	تُقَاتِلُوۡا	وَّلَنۡ	اَبَدًا	مَعِىَ	تَخۡرُجُوۡا	لَّنۡ	فَقُلۡ
दुश्मन से	साथ मेरे	तुम जंग करोगे	और हरगिज़ ना	कभी भी	साथ मेरे	तुम निकलोगे	हरगिज़ ना	पस कह दीजिए

مَعَ الۡخٰلِفِيۡنَ (83)	فَاقۡعُدُوۡا	اَوَّلَ مَرَّةٍ	بِالۡقُعُوۡدِ	رَضِيۡتُمۡ	اِنَّكُمۡ
साथ पीछे रहने वालों के	पस बैठे रहो	पहली बार	बैठने पर	राज़ी हो गए तुम	बेशक तुम

تَقُمۡ	وَّلَا	اَبَدًا	مَّاتَ	مِّنۡهُمۡ	عَلٰٓى اَحَدٍ	تُصَلِّ	وَلَا
आप खड़े हों	और ना	कभी भी	(जो) मर जाए	उनमें से	किसी एक पर	आप नमाज़ पढ़िए	और ना

وَهُمۡ	وَمَاتُوۡا	وَرَسُوۡلِهٖ	بِاللّٰهِ	كَفَرُوۡا	اِنَّهُمۡ	عَلٰى قَبۡرِهٖ ؕ
इस हाल में कि वो	और वो मर गए	और उसके रसूल से	अल्लाह से	कुफ़्र किया	बेशक उन्होंने	उसकी क़ब्र पर

يُرِيۡدُ	اِنَّمَا	وَاَوۡلَادُهُمۡ ؕ	اَمۡوَالُهُمۡ	تُعۡجِبۡكَ	وَلَا	فٰسِقُوۡنَ (84)
चाहता है	बेशक	और औलाद उनकी	माल उनके	ताअज्जुब में डालें आपको	और ना	फ़ासिक़ थे

وَهُمۡ	اَنۡفُسُهُمۡ	وَتَزۡهَقَ	فِى الدُّنۡيَا	بِهَا	يُّعَذِّبَهُمۡ	اَنۡ	اللّٰهُ
इस हाल में कि वो	जानें उनकी	और निकलें	दुनिया में	साथ उनके	वो अज़ाब दे उन्हें	कि	अल्लाह

وَجَاهِدُوۡا	بِاللّٰهِ	اٰمِنُوۡا	اَنۡ	سُوۡرَةٌ	اُنۡزِلَتۡ	وَاِذَاۤ	كٰفِرُوۡنَ (85)
और जिहाद करो	अल्लाह पर	ईमान लाओ	कि	कोई सूरत	उतारी जाती है	और जब	काफ़िर हों

ذَرۡنَا	وَقَالُوۡا	مِنۡهُمۡ	اُولُوا الطَّوۡلِ	اسۡتَاۡذَنَكَ	رَسُوۡلِهٖ	مَعَ
छोड़ दीजिए हमें	और वो कहते हैं	उनमें से	वुसअत वाले	इजाज़त मांगते हैं आपसे	उसके रसूल के	साथ

© AL-HUDA INTERNATIONAL WELFARE FOUNDATION

مَعَ الْخَوَالِفِ	يَّكُوْنُوْا	بِاَنْ	رَضُوْا	مَّعَ الْقٰعِدِيْنَ ﴿86﴾	نَكُنْ
साथ पीछे रहने वालियों के	वो हों	कि	वो राज़ी हो गए	साथ बैठने वालों के	कि हम हो जाएं

وَالَّذِيْنَ	الرَّسُوْلُ	لٰكِنِ	لَا يَفْقَهُوْنَ ﴿87﴾	فَهُمْ	عَلٰى قُلُوْبِهِمْ	وَطُبِعَ
और वो लोग जो	रसूल	लेकिन	नहीं वो समझते	पस वो	उनके दिलों पर	और मोहर लगा दी गई

لَهُمُ	وَاُولٰٓئِكَ	وَاَنْفُسِهِمْ ط	بِاَمْوَالِهِمْ	جٰهَدُوْا	مَعَهٗ	اٰمَنُوْا
जिनके लिए	और यही लोग हैं	और अपनी जानों के	साथ अपने मालों	उन्होंने जिहाद किया	साथ उसके	ईमान लाए

جَنّٰتٍ	لَهُمْ	اللّٰهُ	اَعَدَّ	الْمُفْلِحُوْنَ ﴿88﴾	هُمُ	وَاُولٰٓئِكَ	الْخَيْرٰتُ ز
बाग़ात को	उनके लिए	अल्लाह ने	तैयार कर रखा है	जो फ़लाह पाने वाले हैं	वो	और यही लोग हैं	भलाईयां हैं

الْفَوْزُ	ذٰلِكَ	فِيْهَا ط	خٰلِدِيْنَ	الْاَنْهٰرُ	مِنْ تَحْتِهَا	تَجْرِيْ
कामयाबी	यही है	उनमें	हमेशा रहने वाले हैं	नहरें	उनके नीचे से	बहती हैं

11 ع 9 17

لَهُمْ	لِيُؤْذَنَ	مِنَ الْاَعْرَابِ	الْمُعَذِّرُوْنَ	وَجَآءَ	الْعَظِيْمُ ﴿89﴾ ع
उन्हें	कि इजाज़त दी जाए	बदवियों/देहातियों में से	उज़्र करने वाले	और आ गए	बहुत बड़ी

كَفَرُوْا	الَّذِيْنَ	سَيُصِيْبُ	وَرَسُوْلَهٗ ط	اللّٰهَ	كَذَبُوا	الَّذِيْنَ	وَقَعَدَ
कुफ़्र किया	उन्हें जिन्होंने	अनक़रीब पहुंचेगा	और उसके रसूल से	अल्लाह	झूठ बोला	वो जिन्होंने	और बैठ गए

عَلَى الْمَرْضٰى	وَلَا	عَلَى الضُّعَفَآءِ	لَيْسَ	اَلِيْمٌ ﴿90﴾	عَذَابٌ	مِنْهُمْ
मरीज़ों पर	और ना	ज़ईफ़ों पर	नहीं है	दर्दनाक	अज़ाब	उनमें से

نَصَحُوْا	اِذَا	حَرَجٌ	يُنْفِقُوْنَ	مَا	لَا يَجِدُوْنَ	عَلَى الَّذِيْنَ	وَلَا
वो ख़ैर ख़्वाही करें	जब	कोई हर्ज	वो ख़र्च करें	वो (चीज़) जो	नहीं वो पाते	उन पर जो	और ना

وَاللّٰهُ	مِنْ سَبِيْلٍ ط	عَلَى الْمُحْسِنِيْنَ	مَا	وَرَسُوْلِهٖ ط	لِلّٰهِ
और अल्लाह	कोई मुआख़िज़ा	एहसान करने वालों पर	नहीं है	और उसके रसूल के	वास्ते अल्लाह के

© AL-HUDA INTERNATIONAL WELFARE FOUNDATION

اَتَوْكَ	اِذَا مَآ	عَلَى الَّذِيْنَ	وَّلَا	رَّحِيْمٌ ۙ﴿91﴾	غَفُوْرٌ
वो आए आपके पास	जब भी	उन पर जो	और ना	बहुत रहम करने वाला है	बहुत बख़्शने वाला है

عَلَيْهِ ۠	اَحْمِلُكُمْ	مَآ	لَآ اَجِدُ	قُلْتَ	لِتَحْمِلَهُمْ
जिस पर	मैं सवार करूं तुम्हें	वो जो	नहीं मैं पाता	कहा आपने	ताकि आप सवार करें उन्हें

اَلَّا	حَزَنًا	مِنَ الدَّمْعِ	تَفِيْضُ	وَّاَعْيُنُهُمْ	تَوَلَّوْا
कि नहीं	ग़म की वजह से	आंसुओं से	बह रही थीं	और आंखें उनकी	वो पलट गए

عَلَى الَّذِيْنَ	السَّبِيْلُ	اِنَّمَا	يُنْفِقُوْنَ ۭ﴿92﴾	مَا	يَجِدُوْا
उन पर है जो	मोआख़िज़ा तो	बेशक	वो ख़र्च कर सकें	जो	वो पाते

يَّكُوْنُوْا	بِاَنْ	رَضُوْا	اَغْنِيَاۗءُ ۚ	وَهُمْ	يَسْتَاْذِنُوْنَكَ
हों वो	कि	वो राज़ी होगए	ग़नी हैं	हालांकि वो	इजाज़त तलब करते हैं आपसे

لَا يَعْلَمُوْنَ ﴿93﴾	فَهُمْ	عَلٰي قُلُوْبِهِمْ	اللّٰهُ	وَطَبَعَ	مَعَ الْخَوَالِفِ ۙ
नहीं वो जानते	पस वो	उनके दिलों पर	अल्लाह ने	और मोहर लगा दी	साथ पीछे रहने वालियों के

© AL-HUDA INTERNATIONAL WELFARE FOUNDATION